

प्रस्तावना

[illegible][illegible][illegible]

के द्वारा किया जा सकता है। इनकी सहायता से व्याकरण की सुपक्वता बहुत कुछ दूर की जा सकती है।

पाठों के मध्य में भाषा और विषय दोनों की दृष्टि से सरलता से कठिनता की ओर विस्तार हुआ है। शब्दों की वर्तनी (शिरो) में एक-रूपता देकर शुद्ध और व्यवस्थित शब्दों के लिखने का मार्ग प्रदर्शित किया गया है।

इस प्रकार, शिक्षा-विभाग द्वारा प्रस्तावित नवीन-योजना के अनुसार यह 'साहित्य-प्रकाश' प्रस्तुत किया गया है। इसमें किशोर पाठक-पाठिकाओं की दृष्टि और आवश्यकताओं का ध्यान रखाते हुए ऐसे विषयों का समावेश किया गया है जिन्हें पढ़ने से इनका ज्ञान बढ़े, इनकी रुचि परिमार्जित हो और साथ ही इसमें ऐसे पाठ ही रखे गये हैं जिनको पढ़ते समय छात्रों का मन कभी न ऊबेगा।

इस पुस्तक में उद्धृत रचनाएँ पाप्म-मन्य के लक्ष्य से इनके रचयिताओं ने नहीं लिखी थी। इससे बन्दे इस कार्य के अनुरूप बनाने के लिए कभी-कभी किसी रचना को घटाना, बढ़ाना या बदलना पड़ा है। ऐसा करते समय लेखक की मूल कृति का सौन्दर्य और लक्ष्य नष्ट नहीं होने दिया गया। इसके लिए उनसे क्षमा माँगी जाती है। साथ ही उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाश करना सम्पादक का धर्म है।

आशा है यह संग्रह छात्रों को साहित्य से प्रेम उत्पन्न करने और अच्छे नागरिक बनने में कुछ सहायता अवश्य पहुँचावेगा।

1

2

3

4

5

6

7

विषय-सूची

पृष्ठ		पृष्ठ
१	१. अर्ध-आत्मक	१
२	२. अर्ध-आत्मक	२
३	३. अर्ध-आत्मक	३
४	४. अर्ध-आत्मक	४
५	५. अर्ध-आत्मक	५
६	६. अर्ध-आत्मक	६
७	७. अर्ध-आत्मक	७
८	८. अर्ध-आत्मक	८
९	९. अर्ध-आत्मक	९
१०	१०. अर्ध-आत्मक	१०
११	११. अर्ध-आत्मक	११
१२	१२. अर्ध-आत्मक	१२
१३	१३. अर्ध-आत्मक	१३
१४	१४. अर्ध-आत्मक	१४
१५	१५. अर्ध-आत्मक	१५
१६	१६. अर्ध-आत्मक	१६
१७	१७. अर्ध-आत्मक	१७
१८	१८. अर्ध-आत्मक	१८
१९	१९. अर्ध-आत्मक	१९
२०	२०. अर्ध-आत्मक	२०
२१	२१. अर्ध-आत्मक	२१
२२	२२. अर्ध-आत्मक	२२
२३	२३. अर्ध-आत्मक	२३
२४	२४. अर्ध-आत्मक	२४
२५	२५. अर्ध-आत्मक	२५
२६	२६. अर्ध-आत्मक	२६
२७	२७. अर्ध-आत्मक	२७
२८	२८. अर्ध-आत्मक	२८
२९	२९. अर्ध-आत्मक	२९
३०	३०. अर्ध-आत्मक	३०
३१	३१. अर्ध-आत्मक	३१
३२	३२. अर्ध-आत्मक	३२
३३	३३. अर्ध-आत्मक	३३
३४	३४. अर्ध-आत्मक	३४
३५	३५. अर्ध-आत्मक	३५
३६	३६. अर्ध-आत्मक	३६
३७	३७. अर्ध-आत्मक	३७
३८	३८. अर्ध-आत्मक	३८
३९	३९. अर्ध-आत्मक	३९
४०	४०. अर्ध-आत्मक	४०
४१	४१. अर्ध-आत्मक	४१
४२	४२. अर्ध-आत्मक	४२
४३	४३. अर्ध-आत्मक	४३
४४	४४. अर्ध-आत्मक	४४
४५	४५. अर्ध-आत्मक	४५
४६	४६. अर्ध-आत्मक	४६
४७	४७. अर्ध-आत्मक	४७
४८	४८. अर्ध-आत्मक	४८
४९	४९. अर्ध-आत्मक	४९
५०	५०. अर्ध-आत्मक	५०

साहित्य-प्रकाश

१-अभिलाषा

[प्रकाश से रशों के लिए एक सुन्दर नास्तिक्य-प्रकाश होना है। 'बनघन' इसका नाम है। वनघन भी 'बनघन' के बहुत अच्छी कविताएँ छपा करती हैं। वही मैं से बहुत अच्छी खाती हैं। इन्हें भगवान से प्रार्थना की गयी है। इन्हें बहुत गयी बातों को अपने में सदा पाने की कोशिश करने से भगवान उन्हें इनकी अवस्था देंगे।]

हमें सुमति दो, वह भगवति दो,
जिससे हम न कभी बिगड़ें;
प्रेम बारी दो, नेम बारी दो,
जिससे हम न लड़ें-झड़ें;
सच्चा मन दो, यही लक्ष्य है,
रखते सदा देण का धर्म;
लक्ष्य कर दो, सद्गुरु न मिले,
करें धर्म-धुल का धर्म;
सुख हृदय दो, हमें मिले,
सीखें सदाकर का धर्म;
हमें तित्वा दो, हमें मिले,
हमारी का धर्म।

एक दिन कुंदाकर ने अपने मित्रों को बतला
 केने का विचार किया । उन्होंने भी उसे एक बजाकर
 सिद्धांत बताया देना की जैसे हम सब बातें । अतएव
 वह सबकुछों को बुझाकर सब सिद्धांत सबोंके दिखावा ।
 जिसका मत में कहा — "हम सब लोग सब मित्रों का
 साथ बनाते हैं फिर — हम सिद्धांत को सब से छोड़ने
 के लिए — ऐसा ही करते । सब सबकुछ को मित्रता
 मानते हैं । सब को सबों को सब बातें ही
 हम लोग सब सिद्धांत के लिए ही सब से छोड़ देते हैं ।

वह सबका सब में सबों बुद्धिमान को बुझाकर
 सबों के सबों सब बातें सबों सब, "ये सब
 सब सबों सब का सब बातें । सब सबों सब बातें
 ही सब सबों सब बातें सबों ।

बुद्धिमान ने सब सब बातें सब सब सब सब
 सबों को सब सब सब सब । सब सब में सब, "ये
 सब सब सब सब सब सब सब सबों सब ।

बुद्धिमान ने सब, "ये सब सब ।"

सब सब में सब, सब सब सब सब सब सब सब
 सबों सब सब सब सब सब सब सब सबों सब ।

बुद्धिमान ने सब सब सब, सब सब सब सब सब सब
 सबों सब सब सब सब सब सब सब सबों सब ।

सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब सब ।



४. द्रोणाचार्य ने राजकुमारों की परीक्षा किस प्रकार की ?
५. सुभिक्षर ने उनके किन-किन प्रश्नों के क्या उत्तर दिये ?
६. सुभिक्षर और दूसरे राजकुमारों के उत्तर से आचार्य कयो अप्रसन्न हुए ?
७. अर्जुन कयो निशाना लगा सके ?
८. बाक्य किसे कहते हैं ? इस पाठ में से कोई दस बाक्य छाँटकर लिखो ।

३-फूल और काँटा

[यह कविता परिहस अयोध्यासिंह सपाध्याय 'हरिऔध' ने बनायी है। वे दैसाख ददी बीज सम्वत् १६२२ में पैदा हुए। पहले कुछ दिन तक अपने स्वप्न-मग्न (निजामाबाद, जिला आलमगढ़) में अध्यापक रहे। बाद में आलमगढ़ जिले में ही सदर क्लानूनगो हुए। लक्ष्मण से ही उनकी रुचि कविता करने की ओर रही। उन्होंने बहुत से काव्य लिखे। उनमें से प्रिय-प्रवास, रस-कलश मुख्य हैं। उनकी पुटकल कविताओं के कई संग्रह छप चुके हैं, जैसे—मोल-चाल, चोखे-चौपदे, घुमते-चौपदे आदि। सपाध्यायजी गद्य भी बहुत सुन्दर लिखते हैं। ठेठ हिन्दी का ठाठ, अधखिला फूल—ये उनकी दो प्रसिद्ध गद्य की पुस्तकें हैं। पेशान लेने के बाद से हरिऔधजी काशी के हिन्दू विश्व-विद्यालय में हिन्दी के अध्यापक हैं। वे बहुत ही सरल और मिलनसार हैं।]

इस कविता में कवि ने यह दिखलाया है कि एक ही पीढ़े में पैदा होने और एक ही हालत में रहने पर भी फूल और काँटा एक से नहीं होते। इसका कारण यह है कि काँटा अपने में बढ़प्पन साने की कोशिश नहीं करता।]

निज सुगन्धों को निहाते रहूँ मैं,

हैं मनुष्य हैं। सबों की भी मिला ॥ ४ ॥

हैं सदा ही एक-दूसरे के साथ हैं ।

दत्ता है सोचना हर-गोन हर ॥

निरा दूर दुःख को दूरार्थ क्षान्त दे ।

जो दिखी है वो कहकर ही समझ ॥ ४ ॥

१७. ५५७८३

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

१. ५२१ ४२५५५५ — २६, ५०००, ५०००, ५०००

१. अथ कस्यैव नृणां भूतानां च तेषां च तेषां च तेषां च —

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

[Illegible handwritten signature]

1. 1940-1941

● 2010年10月1日起，凡在中华人民共和国境内销售货物或者提供加工、修理修配劳务以及进口货物的单位和个人，均应按照《中华人民共和国增值税暂行条例》及实施细则缴纳增值税。

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1-10-11

1. 1940-1941
 2. 1942-1943
 3. 1944-1945
 4. 1946-1947
 5. 1948-1949
 6. 1950-1951
 7. 1952-1953
 8. 1954-1955
 9. 1956-1957
 10. 1958-1959
 11. 1960-1961
 12. 1962-1963
 13. 1964-1965
 14. 1966-1967
 15. 1968-1969
 16. 1970-1971
 17. 1972-1973
 18. 1974-1975
 19. 1976-1977
 20. 1978-1979
 21. 1980-1981
 22. 1982-1983
 23. 1984-1985
 24. 1986-1987
 25. 1988-1989
 26. 1990-1991
 27. 1992-1993
 28. 1994-1995
 29. 1996-1997
 30. 1998-1999
 31. 2000-2001
 32. 2002-2003
 33. 2004-2005
 34. 2006-2007
 35. 2008-2009
 36. 2010-2011
 37. 2012-2013
 38. 2014-2015
 39. 2016-2017
 40. 2018-2019
 41. 2020-2021
 42. 2022-2023
 43. 2024-2025
 44. 2026-2027
 45. 2028-2029
 46. 2030-2031
 47. 2032-2033
 48. 2034-2035
 49. 2036-2037
 50. 2038-2039
 51. 2040-2041
 52. 2042-2043
 53. 2044-2045
 54. 2046-2047
 55. 2048-2049
 56. 2050-2051
 57. 2052-2053
 58. 2054-2055
 59. 2056-2057
 60. 2058-2059
 61. 2060-2061
 62. 2062-2063
 63. 2064-2065
 64. 2066-2067
 65. 2068-2069
 66. 2070-2071
 67. 2072-2073
 68. 2074-2075
 69. 2076-2077
 70. 2078-2079
 71. 2080-2081
 72. 2082-2083
 73. 2084-2085
 74. 2086-2087
 75. 2088-2089
 76. 2090-2091
 77. 2092-2093
 78. 2094-2095
 79. 2096-2097
 80. 2098-2099
 81. 2100-2101
 82. 2102-2103
 83. 2104-2105
 84. 2106-2107
 85. 2108-2109
 86. 2110-2111
 87. 2112-2113
 88. 2114-2115
 89. 2116-2117
 90. 2118-2119
 91. 2120-2121
 92. 2122-2123
 93. 2124-2125
 94. 2126-2127
 95. 2128-2129
 96. 2130-2131
 97. 2132-2133
 98. 2134-2135
 99. 2136-2137
 100. 2138-2139
 101. 2140-2141
 102. 2142-2143
 103. 2144-2145
 104. 2146-2147
 105. 2148-2149
 106. 2150-2151
 107. 2152-2153
 108. 2154-2155
 109. 2156-2157
 110. 2158-2159
 111. 2160-2161
 112. 2162-2163
 113. 2164-2165
 114. 2166-2167
 115. 2168-2169
 116. 2170-2171
 117. 2172-2173
 118. 2174-2175
 119. 2176-2177
 120. 2178-2179
 121. 2180-2181
 122. 2182-2183
 123. 2184-2185
 124. 2186-2187
 125. 2188-2189
 126. 2190-2191
 127. 2192-2193
 128. 2194-2195
 129. 2196-2197
 130. 2198-2199
 131. 2200-2201
 132. 2202-2203
 133. 2204-2205
 134. 2206-2207
 135. 2208-2209
 136. 2210-2211
 137. 2212-2213
 138. 2214-2215
 139. 2216-2217
 140. 2218-2219
 141. 2220-2221
 142. 2222-2223
 143. 2224-2225
 144. 2226-2227
 145. 2228-2229
 146. 2230-2231
 147. 2232-2233
 148. 2234-2235
 149. 2236-2237
 150. 2238-2239
 151. 2240-2241
 152. 2242-2243
 153. 2244-2245
 154. 2246-2247
 155. 2248-2249
 156. 2250-2251
 157. 2252-2253
 158. 2254-2255
 159. 2256-2257
 160. 2258-2259
 161. 2260-2261
 162. 2262-2263
 163. 2264-2265
 164. 2266-2267
 165. 2268-2269
 166. 2270-2271
 167. 2272-2273
 168. 2274-2275
 169. 2276-2277
 170. 2278-2279
 171. 2280-2281
 172. 2282-2283
 173. 2284-2285
 174. 2286-2287
 175. 2288-2289
 176. 2290-2291
 177. 2292-2293
 178. 2294-2295
 179. 2296-2297
 180. 2298-2299
 181. 2300-2301
 182. 2302-2303
 183. 2304-2305
 184. 2306-2307
 185. 2308-2309
 186. 2310-2311
 187. 2312-2313
 188. 2314-2315
 189. 2316-2317
 190. 2318-2319
 191. 2320-2321
 192. 2322-2323
 193. 2324-2325
 194. 2326-2327
 195. 2328-2329
 196. 2330-2331
 197. 2332-2333
 198. 2334-2335
 199. 2336-2337
 200. 2338-2339
 201. 2340-2341
 202. 2342-2343
 203. 2344-2345
 204. 2346-2347
 205. 2348-2349
 206. 2350-2351
 207. 2352-2353
 208. 2354-2355
 209. 2356-2357
 210. 2358-2359
 211. 2360-2361
 212. 2362-2363
 213. 2364-2365
 214. 2366-2367
 215. 2368-2369
 216. 2370-2371
 217. 2372-2373
 218. 2374-2375
 219. 2376-2377
 220. 2378-2379
 221. 2380-2381

हुहु मैं मोक्ष-मार्गपर यह हलाल निहाला कि यदि
भीरु को मरवा दिया, राम तो मैं देखने वाला हूँ
मर्दाना । हलाली यह खाने में अन्धा कि भीरु होने को हुए
भय ही ही मन्त्रजि है । राम के लक्षण में हलाली
कर दिया । इसलिए हलाली में मन्त्राद करके मोक्ष
को अन्धों को लीज दिया, ताकि उसे मार दिया जाय ।

एतद् वसन्तं वसन्तं दृष्ट्वा श्री कृष्ण लालको श्री
 कृष्ण लाल । वसन्तं वसन्तं से वसन्तं श्री कृष्ण लाल
 से वसन्तं से वसन्तं वसन्तं दृष्ट्वा श्री कृष्ण लाल से वसन्तं
 श्री कृष्ण लाल । वसन्तं से वसन्तं श्री कृष्ण लाल
 वसन्तं । वसन्तं वसन्तं वसन्तं वसन्तं से वसन्तं वसन्तं
 वसन्तं श्री कृष्ण लाल से वसन्तं श्री कृष्ण लाल से वसन्तं वसन्तं
 वसन्तं से वसन्तं वसन्तं वसन्तं वसन्तं वसन्तं वसन्तं ।

[illegible][illegible][illegible]

पकतावा हो गया है । भोज उसी के महल में था; परन्तु हमने मुझ को यह पताना उचित न समझा । इसलिए हमने उत्तर दिया, “आप धैर्य धारण कीजिये, घबराने से कुछ हो नहीं सकता । यहाँ एक महात्मा आये हुए हैं । सुना है कि वह अपनी शक्ति से मुर्दों को जिला सकते हैं । तो इसमें क्या आश्चर्य है कि भोज भी फिर से जी उठे ।”

मुझ ने मसन्नता से बदलकर कहा, “वह महात्मा कहाँ हैं ? मैं अभी चलकर उनसे मिलूँगा ।”

मन्त्री ने सचर दिया, “आप सोच में न पड़े । वह महात्मा कल सपेरे ही यहाँ पहुँच जायेंगे और महल में खड़े होकर भोज को आवाज़ें देंगे तो वह मुर्दों की दुनिया से उठकर यहाँ आ जायगा ।”

दूसरे दिन मन्त्री साधुओं का वेप बना और लम्बी दाढ़ी लगाकर मुझ के महल में चला गया । मुझ ने उसे हाथ जोड़कर मणाय किया और रोकर कहा, “महाराज, जैसे भी हो मेरे भोज का अभी जोवित कर दीजिये ।”

साधु ने, जो वास्तव में स्वयं मन्त्री हो था, उत्तर दिया, “हे मुझ, यदि तू हमें वचन दो कि फिर कभी भोज से शत्रुता न करोगे तो मैं उमे जोवित दिये देवा हूँ, नहीं तो हमको क्या आवश्यकता है ? राज्य करो ।”

बहकावा हो गया है । मोक्ष हमी के दात में था; परन्तु हमने कुछ को दा बताना छिड़ न मगल । इसलिए हमने उधर दिया, “आर धीरे दात कीधरे, परमाने से कुछ हो ना मगल । दाँ एक दातना आने दुर है । हुना है कि दा हमनी राति में हरी को मिला सकते हैं । जो हमने दा आदर्प है कि मोक्ष भी तिर में की उटे ।”

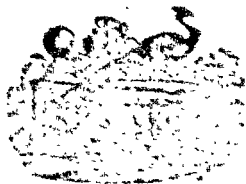
हुना ने दमनदा में दलदलर दा, “दा दातना दाँ है । मैं दा की दातपर हमने दिवना ।”

हमी ने उधर दिया, “आर मोक्ष में न रहे । दा दातना दात मरे ही दाँ दूर आने के और दात में मरे तेर मोक्ष की दातने के की दा हरी की हुना में उधर दाँ दा दातना ।”

हुने दिन हमी दातना दा तेर दा की दा हमी दाँ दातना हुना के दात में दात मगल । हुना ने हमे दात मोक्षर दातना दिया की तेर दा, “दातना, तेने की हो मरे मोक्ष दा हमी कीरि दा होमरे ।”

महु ने, जो दातना में मरे हमी हो दा, हुना दिया, “दे हुना, दाँ दा हुने दात हो कि तिर दात मोक्ष में दातना न दाँ की हो मैं हुने कीरि दिने तेर है, नाँ की हमनी दात दातना है । दातना में दात दाँ ।”

कह तु हो मदभक्त, मेरे को तुम्ह दिखारै,
अति ममोद मत आन हरे के समु द्यारै ॥



देसा क्षमता नाथ दिवा इच्छो नो प्यारे,
जिते देस ते भोग, मोद मन होय इत्यरे ।

55 56 57

$\frac{1}{2} \times \frac{1}{2} = \frac{1}{4}$, $\frac{1}{2} \times \frac{1}{3} = \frac{1}{6}$, $\frac{1}{3} \times \frac{1}{3} = \frac{1}{9}$, $\frac{1}{4} \times \frac{1}{4} = \frac{1}{16}$, $\frac{1}{5} \times \frac{1}{5} = \frac{1}{25}$, $\frac{1}{6} \times \frac{1}{6} = \frac{1}{36}$, $\frac{1}{7} \times \frac{1}{7} = \frac{1}{49}$, $\frac{1}{8} \times \frac{1}{8} = \frac{1}{64}$, $\frac{1}{9} \times \frac{1}{9} = \frac{1}{81}$, $\frac{1}{10} \times \frac{1}{10} = \frac{1}{100}$, $\frac{1}{11} \times \frac{1}{11} = \frac{1}{121}$, $\frac{1}{12} \times \frac{1}{12} = \frac{1}{144}$, $\frac{1}{13} \times \frac{1}{13} = \frac{1}{169}$, $\frac{1}{14} \times \frac{1}{14} = \frac{1}{196}$, $\frac{1}{15} \times \frac{1}{15} = \frac{1}{225}$, $\frac{1}{16} \times \frac{1}{16} = \frac{1}{256}$, $\frac{1}{17} \times \frac{1}{17} = \frac{1}{289}$, $\frac{1}{18} \times \frac{1}{18} = \frac{1}{324}$, $\frac{1}{19} \times \frac{1}{19} = \frac{1}{361}$, $\frac{1}{20} \times \frac{1}{20} = \frac{1}{400}$, $\frac{1}{21} \times \frac{1}{21} = \frac{1}{441}$, $\frac{1}{22} \times \frac{1}{22} = \frac{1}{484}$, $\frac{1}{23} \times \frac{1}{23} = \frac{1}{529}$, $\frac{1}{24} \times \frac{1}{24} = \frac{1}{576}$, $\frac{1}{25} \times \frac{1}{25} = \frac{1}{625}$, $\frac{1}{26} \times \frac{1}{26} = \frac{1}{676}$, $\frac{1}{27} \times \frac{1}{27} = \frac{1}{729}$, $\frac{1}{28} \times \frac{1}{28} = \frac{1}{784}$, $\frac{1}{29} \times \frac{1}{29} = \frac{1}{841}$, $\frac{1}{30} \times \frac{1}{30} = \frac{1}{900}$, $\frac{1}{31} \times \frac{1}{31} = \frac{1}{961}$, $\frac{1}{32} \times \frac{1}{32} = \frac{1}{1024}$, $\frac{1}{33} \times \frac{1}{33} = \frac{1}{1089}$, $\frac{1}{34} \times \frac{1}{34} = \frac{1}{1156}$, $\frac{1}{35} \times \frac{1}{35} = \frac{1}{1225}$, $\frac{1}{36} \times \frac{1}{36} = \frac{1}{1296}$, $\frac{1}{37} \times \frac{1}{37} = \frac{1}{1369}$, $\frac{1}{38} \times \frac{1}{38} = \frac{1}{1444}$, $\frac{1}{39} \times \frac{1}{39} = \frac{1}{1521}$, $\frac{1}{40} \times \frac{1}{40} = \frac{1}{1600}$, $\frac{1}{41} \times \frac{1}{41} = \frac{1}{1681}$, $\frac{1}{42} \times \frac{1}{42} = \frac{1}{1764}$, $\frac{1}{43} \times \frac{1}{43} = \frac{1}{1849}$, $\frac{1}{44} \times \frac{1}{44} = \frac{1}{1936}$, $\frac{1}{45} \times \frac{1}{45} = \frac{1}{2025}$, $\frac{1}{46} \times \frac{1}{46} = \frac{1}{2116}$, $\frac{1}{47} \times \frac{1}{47} = \frac{1}{2209}$, $\frac{1}{48} \times \frac{1}{48} = \frac{1}{2304}$, $\frac{1}{49} \times \frac{1}{49} = \frac{1}{2401}$, $\frac{1}{50} \times \frac{1}{50} = \frac{1}{2500}$, $\frac{1}{51} \times \frac{1}{51} = \frac{1}{2601}$, $\frac{1}{52} \times \frac{1}{52} = \frac{1}{2704}$, $\frac{1}{53} \times \frac{1}{53} = \frac{1}{2809}$, $\frac{1}{54} \times \frac{1}{54} = \frac{1}{2916}$, $\frac{1}{55} \times \frac{1}{55} = \frac{1}{3025}$, $\frac{1}{56} \times \frac{1}{56} = \frac{1}{3136}$, $\frac{1}{57} \times \frac{1}{57} = \frac{1}{3249}$, $\frac{1}{58} \times \frac{1}{58} = \frac{1}{3364}$, $\frac{1}{59} \times \frac{1}{59} = \frac{1}{3481}$, $\frac{1}{60} \times \frac{1}{60} = \frac{1}{3600}$, $\frac{1}{61} \times \frac{1}{61} = \frac{1}{3721}$, $\frac{1}{62} \times \frac{1}{62} = \frac{1}{3844}$, $\frac{1}{63} \times \frac{1}{63} = \frac{1}{3969}$, $\frac{1}{64} \times \frac{1}{64} = \frac{1}{4096}$, $\frac{1}{65} \times \frac{1}{65} = \frac{1}{4225}$, $\frac{1}{66} \times \frac{1}{66} = \frac{1}{4356}$, $\frac{1}{67} \times \frac{1}{67} = \frac{1}{4489}$, $\frac{1}{68} \times \frac{1}{68} = \frac{1}{4624}$, $\frac{1}{69} \times \frac{1}{69} = \frac{1}{4761}$, $\frac{1}{70} \times \frac{1}{70} = \frac{1}{4900}$, $\frac{1}{71} \times \frac{1}{71} = \frac{1}{5041}$, $\frac{1}{72} \times \frac{1}{72} = \frac{1}{5184}$, $\frac{1}{73} \times \frac{1}{73} = \frac{1}{5329}$, $\frac{1}{74} \times \frac{1}{74} = \frac{1}{5476}$, $\frac{1}{75} \times \frac{1}{75} = \frac{1}{5625}$, $\frac{1}{76} \times \frac{1}{76} = \frac{1}{5776}$, $\frac{1}{77} \times \frac{1}{77} = \frac{1}{5929}$, $\frac{1}{78} \times \frac{1}{78} = \frac{1}{6084}$, $\frac{1}{79} \times \frac{1}{79} = \frac{1}{6241}$, $\frac{1}{80} \times \frac{1}{80} = \frac{1}{6400}$, $\frac{1}{81} \times \frac{1}{81} = \frac{1}{6561}$, $\frac{1}{82} \times \frac{1}{82} = \frac{1}{6724}$, $\frac{1}{83} \times \frac{1}{83} = \frac{1}{6889}$, $\frac{1}{84} \times \frac{1}{84} = \frac{1}{7056}$, $\frac{1}{85} \times \frac{1}{85} = \frac{1}{7225}$, $\frac{1}{86} \times \frac{1}{86} = \frac{1}{7396}$, $\frac{1}{87} \times \frac{1}{87} = \frac{1}{7569}$, $\frac{1}{88} \times \frac{1}{88} = \frac{1}{7744}$, $\frac{1}{89} \times \frac{1}{89} = \frac{1}{7921}$, $\frac{1}{90} \times \frac{1}{90} = \frac{1}{8100}$, $\frac{1}{91} \times \frac{1}{91} = \frac{1}{8281}$, $\frac{1}{92} \times \frac{1}{92} = \frac{1}{8464}$, $\frac{1}{93} \times \frac{1}{93} = \frac{1}{8649}$, $\frac{1}{94} \times \frac{1}{94} = \frac{1}{8836}$, $\frac{1}{95} \times \frac{1}{95} = \frac{1}{9025}$, $\frac{1}{96} \times \frac{1}{96} = \frac{1}{9216}$, $\frac{1}{97} \times \frac{1}{97} = \frac{1}{9409}$, $\frac{1}{98} \times \frac{1}{98} = \frac{1}{9604}$, $\frac{1}{99} \times \frac{1}{99} = \frac{1}{9801}$, $\frac{1}{100} \times \frac{1}{100} = \frac{1}{10000}$, $\frac{1}{101} \times \frac{1}{101} = \frac{1}{10201}$, $\frac{1}{102} \times \frac{1}{102} = \frac{1}{10404}$, $\frac{1}{103} \times \frac{1}{103} = \frac{1}{10609}$, $\frac{1}{104} \times \frac{1}{104} = \frac{1}{10816}$, $\frac{1}{105} \times \frac{1}{105} = \frac{1}{11025}$, $\frac{1}{106} \times \frac{1}{106} = \frac{1}{11236}$, $\frac{1}{107} \times \frac{1}{107} = \frac{1}{11449}$, $\frac{1}{108} \times \frac{1}{108} = \frac{1}{11664}$, $\frac{1}{109} \times \frac{1}{109} = \frac{1}{11881}$, $\frac{1}{110} \times \frac{1}{110} = \frac{1}{12100}$, $\frac{1}{111} \times \frac{1}{111} = \frac{1}{12321}$, $\frac{1}{112} \times \frac{1}{112} = \frac{1}{12544}$, $\frac{1}{113} \times \frac{1}{113} = \frac{1}{12769}$, $\frac{1}{114} \times \frac{1}{114} = \frac{1}{12996}$, $\frac{1}{115} \times \frac{1}{115} = \frac{1}{13225}$, $\frac{1}{116} \times \frac{1}{116} = \frac{1}{13456}$, $\frac{1}{117} \times \frac{1}{117} = \frac{1}{13689}$, $\frac{1}{118} \times \frac{1}{118} = \frac{1}{13924}$, $\frac{1}{119} \times \frac{1}{119} = \frac{1}{14161}$, $\frac{1}{120} \times \frac{1}{120} = \frac{1}{14400}$, $\frac{1}{121} \times \frac{1}{121} = \frac{1}{14641}$, $\frac{1}{122} \times \frac{1}{122} = \frac{1}{14884}$, $\frac{1}{123} \times \frac{1}{123} = \frac{1}{15129}$, $\frac{1}{124} \times \frac{1}{124} =$

Figure 1

- [illegible]

बड़ों के साथ व्यवहार

(१) यदि कोई बड़ा बुलाये तो “क्या” या “हाँ” मत कहो; “जी” या “जी हाँ” कहो ।

(२) लोगों को बुलाने या पत्र लिखने या सनकी चर्चा करने में उनके नाम के पहले पण्डित, बापू, महाशय, मौलवी इत्यादि जो उचित हो अवश्य लगाना चाहिये । यदि नाम न लिखा जाय, तो “पण्डितजी” या “मौलवी साहब” आदि कहना या लिखना चाहिये ।

(३) अपने से बड़े को ओर जहाँ तक हो सके पीठ करके मत बैठो या पीठ करके मत चलो ।

(४) अपने गुरु, पिता आदि के साथ चलना हो, तो मनसे एक-दो कदम पीछे रहो । यदि वे पीछे हों, तो रास्ता देकर उनको आगे हो जाने दो ।

(५) कोई काम साथ करना हो तो जो छोटा है, उसको पहले तैयार हो जाना चाहिये । अच्छा तो यहो है कि दोनों साथ ही उद्यत हों । अपने लिए अपने से बड़े को मतीक्षा नहीं करानी चाहिये ।

(६) अगर कोई बड़ा तुमको किसी दूर के आदमी को बुलाने के लिए कहे, तो वहीं से मत चिल्लाओ, कुछ आगे बढ़कर उसको बुला लो । अगर किसी बड़े को बुलाना हो, तो दौड़कर उनके पास चले जाओ ।

(७) कथा या व्याख्यान के बीच में न उठो ।

रहे कि उनके मन के लिये ललित विनोद रहे।

३. किसी को के लिये मरुती पर बैठते समय इसे कहीं बैठना बहिये।
४. समय-समय में बीज-बीज की कानों लुके सम्झी जाती है।
५. इस लक्ष में बतानी हुई बीज-बीज की बहने हुए कभी तक नहीं बहते दे।
६. इन कानों में लोभन की विधि बताने—
 (क) इसे कानों एक दूसरे के लिये बैठा बनाता करते हैं।
 (ख) एक के लिये एक दूसरे है।
 (ग) दोनों में एक दूसरे मिली।

७—जन्म-भूमि

(यह कविता पवित्र न्याय-प्रसार विरोधी में लिखी है।
 (सबसे अधिक लाले दिवस का सुख है।) यह कविता कविताओं
 के लिये न्याय-संग्रह से की गई है। इनमें कवि ने यह
 निरूपण है कि किन देशों में हमारा जन्म हुआ है हम भारत-
 देश में जन्म हुआ है हमारे लिये देश को ही नहीं, सभी
 को नहीं है। यह विचार तक है। हमारे मन में हम सब को पालने
 कि हमारे देश को सब से अधिक लाले और हमारे कानों-जाने
 कानों से लुभन में बहुत मन बने।

तुम्हारे बन्धु हैं हम ही हमारे

जन्म-भूमि हम सब न पाली।

हैं सदादि-भक्त हैं विद्वान्,

हमारे हमारे सब लाली। १०

हाँ सदादि-भक्त हैं विद्वान्,

हाँ सब से सब लाली।

जन्म - भूदि की पहिचानी है,

एक एकद्वार से ही प्यारी है ।

राष्ट्रीय पहिना अति भारी है ।

हृदि यी इत्यथी सुखयसी है ॥ ८ ॥

५५-५८८५३

॥ अथ भगवत्पूजायाः विधानम् ॥
 ॥ भगवत्पूजायाः विधानम् ॥

५२२५६

- [illegible]

二、三、四、五

1. 凡在本行開辦之各項業務，均應遵守本行所定之規章制度，並應隨時注意業務之改進，以期提高服務品質。

कर लिया कि बिना बदयगिह के धारें मैं राजा नहीं रह
सकता ।

सदयसिंह को माता-रिक्ता का सुखे थे, इसलिए अपना नाम भी एक दाई इनका बालन सोदण करती थी। हमारे भी सदयसिंह ही थी। हम का एक लड़का था। वह दोनों को खुद पारती थी। दोनों लड़के काद ही खाते-पीते और खेलते-कूदते थे।

एक दिन रात को हलदीर मलवार केकर अपने
 बाल में निपटता । पहले वह विष्णुमहिम्न के कोठे में
 पहुँचा । देवारे धोजनकर वहीं पर बैठे हो थे । हलदीर
 ने जाते ही उनकी गर्दन पर देवी मलवार वाली दि
 वनका तिर यह में बल्लभ हो गया । उन्हें जाते देकर बाल
 की हिरी कोड़े-कोड़े लगी ।

पण इत तब होनी लड़की को सुनाए मैं-मैंने
 कुछ सोच था ही । एकाएक तब में सोने की आवाज
 सुनकर हमें बड़ा डर हुआ । हमने ही एक नार् था
 तब हमने ही सोचा । पण मे लकने इस सपने का
 कारण हुआ । यह बात सुनकर बेचारा हा में डरने
 लगी । हा जान लगी कि वह हमारे ही दिल-दिमाग का
 बात लगी है, यह वह कहलिया का ही कहना ही है-
 हमने हवाका वह लकना । पण मे लकने का ही हम
 कहलिया ही दिल दिमाग का जग में कुछ हमने बात

वहाँ न रखा । तब वह कमलनेर के क़िले में पहुँची ।
 वहाँ आशाशाह नाम का एक सरदार था । पन्ना के
 समझाने-बुझाने से इस सरदार ने उदयसिंह को अपना
 भतीजा बतलाकर अपने यहाँ रख लिया ।

वहाँ उदयसिंह बड़े हुए और तब वे चिचौर के राजा
 बनाये गये ।

सम्झाव

१. बनवौर ने उदयसिंह को कनो मारने का निधन दिया ।
२. पन्ना ने उदय को कैने बचाया ।
३. छत्रने बेटे के मारे जाने पर पन्ना कनो नहीं रोई ।
४. लड़े बटवाओ—पन्न में यह बात खटखटी दी, बेबारी दर से लग
 हो कनो, उठ बालक के हो दुइड़े दर दिसे ।
५. पन्ना की ही तरह यदि किसी दूसरे सेवक के त्याग का हाल दुर्गे
 मायन हो हो मिले ।
६. नीचे लिखे उद्देश्यों के साथ उचित विधि से पढ़ो :—
 (क) एक दिन उठोगे—..... ।
 (ख) दोली बढ़वे—..... ।
 (ग) बनवौर ने—..... ।

६—वीरवल की खिचड़ी

[इस पाठ के लेखक राजलक्ष्मण बाबू मुरजनासयन नापुर
 बी० ए० हैं । आप काश्मिर इलाहाबाद के नामित स्कूल में
 हेडमास्टर हैं । शिक्षा-विभाग में आपकी योग्यता और सदुपकार
 का अग्रश मान है । आपने बच्चों के लिये 'भारत के मयूत'
 नामक एक पुस्तक लिखी है । उसमें हमारे देश के पुराने और

साठ-शतावधः

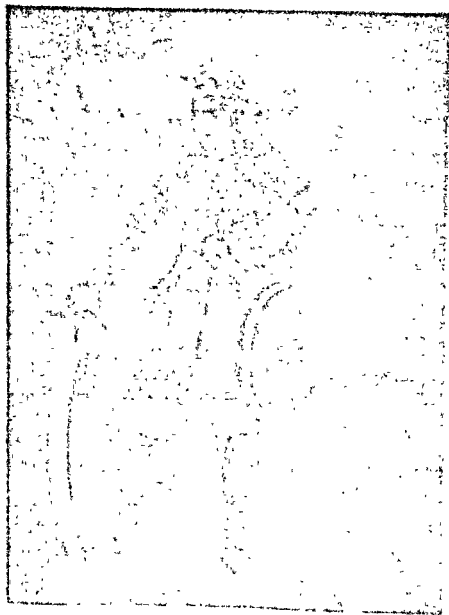
द्विजों के आगरे आगरे के रहने था । वहाँ
जाने वहाँ हिन्दा बनना था वहाँ बहुत नदी है । द्विजा बहुत के
काए ही है ।

५७५१२१

- [illegible]

१०—रानी दुर्गादेवी।

[11]
 [12]
 [13]
 [14]
 [15]
 [16]
 [17]
 [18]
 [19]
 [20]
 [21]
 [22]
 [23]
 [24]
 [25]
 [26]
 [27]
 [28]
 [29]
 [30]
 [31]
 [32]
 [33]
 [34]
 [35]
 [36]
 [37]
 [38]
 [39]
 [40]
 [41]
 [42]
 [43]
 [44]
 [45]
 [46]
 [47]
 [48]
 [49]
 [50]
 [51]
 [52]
 [53]
 [54]
 [55]
 [56]
 [57]
 [58]
 [59]
 [60]
 [61]
 [62]
 [63]
 [64]
 [65]
 [66]
 [67]
 [68]
 [69]
 [70]
 [71]
 [72]
 [73]
 [74]
 [75]
 [76]
 [77]
 [78]
 [79]
 [80]
 [81]
 [82]
 [83]
 [84]
 [85]
 [86]
 [87]
 [88]
 [89]
 [90]
 [91]
 [92]
 [93]
 [94]
 [95]
 [96]
 [97]
 [98]
 [99]
 [100]
 [101]
 [102]
 [103]
 [104]
 [105]
 [106]
 [107]
 [108]
 [109]
 [110]
 [111]
 [112]
 [113]
 [114]
 [115]
 [116]
 [117]
 [118]
 [119]
 [120]
 [121]
 [122]
 [123]
 [124]
 [125]
 [126]
 [127]
 [128]
 [129]
 [130]
 [131]
 [132]
 [133]
 [134]
 [135]
 [136]
 [137]
 [138]
 [139]
 [140]
 [141]
 [142]
 [143]
 [144]
 [145]
 [146]
 [147]
 [148]
 [149]
 [150]
 [151]
 [152]
 [153]
 [154]
 [155]
 [156]
 [157]
 [158]
 [159]
 [160]
 [161]
 [162]
 [163]
 [164]
 [165]
 [166]
 [167]
 [168]
 [169]
 [170]
 [171]
 [172]
 [173]
 [174]
 [175]
 [176]
 [177]
 [178]
 [179]
 [180]
 [181]
 [182]
 [183]
 [184]
 [185]
 [186]
 [187]
 [188]
 [189]
 [190]
 [191]
 [192]
 [193]
 [194]
 [195]
 [196]
 [197]
 [198]
 [199]
 [200]
 [201]
 [202]
 [203]
 [204]
 [205]
 [206]
 [207]
 [208]
 [209]
 [210]
 [211]
 [212]
 [213]
 [214]
 [215]
 [216]
 [217]
 [218]
 [219]
 [220]
 [221]
 [222]
 [223]
 [224]
 [225]
 [226]
 [227]
 [228]
 [229]
 [230]
 [231]
 [232]
 [233]
 [234]
 [235]
 [236]
 [237]
 [238]
 [239]
 [240]
 [241]
 [242]
 [243]
 [244]
 [245]
 [246]
 [247]
 [248]
 [249]
 [250]
 [251]
 [252]
 [253]
 [254]
 [255]
 [256]
 [257]
 [258]
 [259]
 [260]
 [261]
 [262]
 [263]
 [264]
 [265]
 [266]
 [267]
 [268]
 [269]
 [270]
 [271]
 [272]
 [273]
 [274]
 [275]
 [276]
 [277]
 [278]
 [279]
 [280]
 [281]
 [282]
 [283]
 [284]
 [285]
 [286]
 [287]
 [288]
 [289]
 [290]
 [291]
 [292]
 [293]
 [294]
 [295]
 [296]
 [297]
 [298]
 [299]
 [300]
 [301]
 [302]
 [303]
 [304]
 [305]
 [306]
 [307]
 [308]
 [309]
 [310]
 [311]
 [312]
 [313]
 [314]
 [315]
 [316]
 [317]
 [318]
 [319]
 [320]
 [321]
 [322]
 [323]
 [324]
 [325]
 [326]
 [327]
 [328]
 [329]
 [330]
 [331]
 [332]
 [333]
 [334]
 [335]
 [336]
 [337]
 [338]
 [339]
 [340]
 [341]
 [342]
 [343]
 [344]
 [345]
 [346]
 [347]
 [348]
 [349]
 [350]
 [351]
 [352]
 [353]
 [354]
 [355]
 [356]
 [357]
 [358]
 [359]
 [360]
 [361]
 [362]
 [363]
 [364]
 [365]
 [366]
 [367]
 [368]
 [369]
 [370]
 [371]
 [372]
 [373]
 [374]
 [375]
 [376]
 [377]
 [378]
 [379]
 [380]
 [381]
 [382]
 [383]
 [384]
 [385]
 [386]
 [387]
 [388]
 [389]
 [390]
 [



एक-एक तीर लगा। उसके कई एक योद्धाओं ने इस समय उसे क़िले में चले जाने की सलाह दी; परन्तु रानी ने कहा कि युद्ध में पीठ दिखाना धृत्रियों का धर्म नहीं है। वह वहीं टटो रही। अन्त में जब उसने देखा कि अब विजय की आशा करना व्यर्थ है, तब हाथी हाँकने का बंझुरा लेकर अपने पेट में मार लिया और प्राण छोड़ दिये। इस समय उसके पास दूः वीर रह गये थे, जो अपनी जान हथेली पर रखकर बादशाही सेना पर दृष्ट पड़े और अनेक शत्रुओं को मारते हुए स्वर्ग को मिथारे।

दुर्गावती के मारे जाने पर आसफ़ खाँ ने क़िले को चारों ओर से घेर लिया। बालक वीरनारायण दो महीने तक बड़ी वीरता के साथ क़िले को रक्षा करता रहा। अन्त में मारा गया। उसके मरते ही बचे हुए राजपूत मरने का विचार करके क़िले से बाहर निकल आये और बादशाही फौज से भिड़ गये। छपर क़िले में स्त्रियों ने बहुत सा सामान इकट्ठा करके उसमें आग लगा ली और बच्चों समेत उसी आग में जल मरीं। इस एक माँ राजपूत जीता न बचा। यों गढ़-मण्डला का राज अकबर के हाथ आया।

पाठ-सहायक

महोबा—यह आजकल माली बनिमाले के हस्तिपुर क़िला में एक इलाका है। दुर्गावती के नाम से यह कविता रचानी थी। आता-उड़ता यहाँ के थे। गढ़-मण्डला—यह स्थान मध्यप्रदेश में है। तोप—एक प्रकार का हथियार, जिसमें दोहा भरकर मारा जाता है।

[illegible][illegible]

[Handwritten musical notation]

फस्वर को पिघलाकर मोम बनानेवाली ।

मुख खोलो तो मीठी बोली बोली, प्यारे ॥१॥

रगड़ों-भगड़ों का कहुआपन खोनेवाली ।

जी में लगी हुई काई को धोनेवाली ॥

सदा जोड़ देनेवाली जो टूटा नावा ।

मीठी बोली प्यार-बीज है बोनेवाली ॥२॥

काँयों में भी सुन्दर फूल खिलानेवाली ।

रखनेवाली कितने ही मुखड़ों की लाली ॥

निपट बना देनेवाली है बिगड़ी बातें ।

होती है मोठी बोली की करदूब निराली ॥३॥

जी चमगानेवाली चाह बढ़ानेवाली ।

दिल के पेचीले तालों को सच्ची ताली ॥

फँसानेवाली सुगन्ध सब ओर झनूरी ।

मीठी बोली है पाँदे फूलों की डाली ॥४॥

बह जाता है चरों बीच रस सुन्दर सोना ।

प्यारा बनना है बन बसनेवाला तोता ॥

बुझ जाती है चैर-झूट की आग धधकती ।

मीठी बोली से है जन पर जादू होवा ॥५॥

सन्नात

१. कदं रडकाओ—कहुआपन, प्यार-बीज, करदूब, झनूरी ।

२. अर्थ खिलो और झनने बनने वाली में झनने करो—झाँसे-
हारे, मुखड़ों की लाली, मीठी बोली से है जन पर जादू होवा ।

३. 'परपर को पिघलाकर मोम बनानेवाली' और 'दिल के पेचीले तानों की सघी तानों' का मनलघु समझाओ ।
४. इस पाठ के पढ़ने से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?
५. मीठी खेती से वन में यमनैराज्य लेना कैसे प्पाटा बन जाता है ?
६. मीठी खेती बोलने से दूसरों पर कैसा प्रभाव पड़ता है ?
७. पूरी कविता याद करके सुनाओ ।
८. सर्वनाम किसे कहते हैं ? उसका प्रयोग कहाँ होता है ?

१३—मकड़ी

[इसके लेखक परिह्वन भूपनारायण दीक्षित, एम० ए०, पल० टी० हैं । आप गयनमेंट हाई-स्कूल, उम्राव में अध्यापक हैं । बालकों की रुचि का आपको विशेष रूप से ज्ञान है । इसी से आपको लिखी हुई पुस्तिका में बालका का मूल्य मनबहलाव होता है । वे उनका बड़े चार में पढ़ाने हैं । उनकी भाषा बलनी हुई और सुहावनेदार होती है । आपको लिखा हुई पुस्तकों में नटखट पॉले, गधे की कहानी, कने मरने और नुनरी विशेष प्रसिद्ध है । दाक्षिण की कविता भी जानते हैं]

इस पाठ में लेखक ने मकड़ी का चित्रण किया है । इसमें हम जाना राज अपने घरों में इया कर रहे हैं । उदा। मा जानने योग्य बात बनलायी है]

छाटे-छोटे जीव मनुष्यों से पकड़ी भी पकड़ बड़ा विचित्र जीव है । एक माथ पिलकर रहनवाष्ट मनुष्यों से पकड़ी का दर्मा घर में उँचा है । बुद्धि और उदादुग से पकड़ी चींटी, बर नया पदुपम्यों से बड़ा बड़कर है । पकड़ी की एकार जानि का डादकर, शर पनुपम जानि को किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाना । बलिक उलट

मच्छड़, मक्खी, गुवरैले इत्यादि तंग करनेवाले कीड़ों को मारकर हमारी सहायता करती है। जितने प्रकार के कीड़े-मकोड़े दुनिया में हैं, उन सबसे मकड़ी की दुश्मनी है। वे मकड़ी को और मकड़ी उन्हें मारने को हरदम तैयार रहती हैं और खुद जब वह किसी जन्तु पर हमला करती हैं तब ऐसी भयानक हो जाती हैं कि यदि उसे भाठ पैर वाला शेर कहा जाय तो अनुचित न होगा। साथ ही जब कोई ज़बर्दस्त जीव उस पर हमला करता है तब तो वह कोने में दुबकती हुई या जान लेकर भागती हुई एकदम भयातुरता की मूर्ति बन जाती है।

मकड़ियाँ बहुत किस्म के जाले तानती हैं और उन्हीं की सहायता से शिकार पकड़ती हैं। मकड़ी के जाले तो सबने देखे ही होंगे। वह अपनी राल से ऐसे शच्छे-शच्छे जाले बनाती हैं कि देखकर दंग रह जाना पड़ता है। जाले प्रायः गोल होते हैं और इस तरकोब से बनाये जाते हैं कि कोई हलकी वस्तु, जिसका बोझ वे सँभाल सकते हैं, उनमें पड़कर नीचे नहीं आ सकती।

कुछ जाले कोठरीनुमा होते हैं। ऐसे जाले दो दीवारों के कोनों, छतों की टहनियों या छप्परों के वासों में बनते हैं। प्रत्येक जाले में तीन पतें होते हैं—एक ऊपर, एक नीचे और एक बीच में। जो पतें पहले दो पतों को परस्पर जोड़ता है वह बाहरी दीवार का काम देता है।

हैं तब झेंघरे में मकड़ी यह समझकर कि शायद कोई मक्खी आ फँसी है, चट से उस पर हमला कर देती है। इधर वर्रे अपने को भयभीत सी दिखलाती हुई बाहर को भागती है, पर मकड़ी उसका पीछा नहीं छोड़ती और उसके पीछे-पीछे सूरसुर के बाहर तक चली जाती है। यहाँ पहुँचते ही वर्रे घूमकर उसपर एकदम पिल पड़ती है और ढंक मारकर उसे बेहोश कर देती है। फिर उसे अपने छत्ते में ले जाती है।

अण्डे देने की ऋतु में वर्रे इनका विशेषरूप से शिकार करती हैं, क्योंकि उस अवसरपर यदि कोई मकड़ी हाथ लग गयी तो फिर उन्हें लुत्ता बनाने का परिश्रम नहीं उठाना पड़ता। शिकार का हुई मकड़ी के बिल को ही वे अपना घर बना लेती हैं और उसी में अण्डे देती हैं। इन अण्डों से जो बच्चे निकलते हैं, वे उमा मकड़ी को खाकर पुष्ट होकर समय पर बाहर निकल आते हैं। इस प्रकार ये वर्रे मकड़ियों का केवल शिकार ही नहीं करतीं, बल्कि उनके घरों पर भी कब्जा कर लेती हैं।

मकड़ियों का संसार के सम्पूर्ण जीवों से तो शत्रुता रहता है। उनका आपस में भी मेल-जोल नहीं रहता। यदि उनमें यहाँ कोई कानून है तो यही कि "जिमकी लाठी उसका भैंस।" मान लीजिये एक मकड़ी ने बड़े परिश्रम से एक जाला तैयार किया, दूसरी मकड़ी उधर

पाठ-सहायक

भयादुरता = भयानकता । केठरीकुला = केठरी की तरह । स्थिति =
 स्थिति । चल = एक तरह का चलना । एकत्र = इकट्ठा होना ।

अभ्यास

मछड़ों मनुष्यों को क्या ज्ञान पहुँचाती है । उनके शेर क्यों कहा जा
 सकता है । और भय के समय वह जानना जान कैसे बताती है ?

मछड़ों जानना सिखाते हैं क्या बताती है ?

मछड़ों के जाने का क्या मतलब है ?

मछड़ों के दुर्गम होने की बात है । और यही उनके भय के कारण
 बताया जाता है ।

मछड़ों का भय किस कारण से है ?

मछड़ों के भय के कारण है ।

मछड़ों के भय के कारण है ।

मछड़ों के भय के कारण है ।

मछड़ों के भय के कारण है ।

(६१)

(६१)

(६१)

(६१)

(६१)

१४—भारत के राजाओं की शिक्षा-प्रणाली

भारत के राजाओं की शिक्षा-प्रणाली

भारत के राजाओं की शिक्षा-प्रणाली

भारत के राजाओं की शिक्षा-प्रणाली

भारत के राजाओं की शिक्षा-प्रणाली

कुछ अँगरेजी, फारसी और संस्कृत से अनुवादित हैं। आप भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाते हैं। उनका एक बहुत सुन्दर जीवन-चरित्र आपने छोड़े दिन हुए लिखा है। इस लेख में हरिश्चन्द्र जी के स्वभाव का एक श्रेष्ठ अंग दिखलाया गया है।]

भारतेन्दु जी स्वभाव ही से बड़े विनोदप्रिय थे। उर्दू-भाषा में जिसे जिन्दादिली (सजीवता) कहते हैं, वह इनमें कूट-कूटकर भरो षो। अनेक प्रकार के कष्ट सहकर भी ये पसल-चित्त तथा आनन्द-मग्न रहते थे। आकृति भी ईश्वर ने वैसी ही दी थी।

साहित्याचार्य मुकवि पण्डित अम्बिकादत्त व्यास ने लिखा है—“दूर से लोग इनकी मधुर कविता सुन आकृष्ट होते थे और समीप आ मधुर रसामुन्दर पुष्पाब्जे बालवाली मञ्जुल मूर्ति देखकर बलिहारो होते थे। बार्त्तालाप में इनके मिष्ट मापण, नम्रता और शिष्ट व्यवहार से वशंवद हो जाते थे।”

बाल्यकाल में ये बड़े चंचल थे। छुँदेरों, हचों तथा चलती गाड़ी पर चढ़ने-कूदने का ऐसा शौक था कि माण की भी परवा न करते थे। पञ्चक्रोशी करने हुए एक बार ‘कंदवा’ ① (कदम्पेश्वर) से जो दीढ़े तो ‘भीम-बण्डी’ ② पहुँचकर दम लिया। गलियों में दीवारों पर

● दोनों स्थान काशी के राजा प्रसिद्ध पंचक्रोशी गढ़ पर हैं। दोनों में अनुमानः पाँच मील का अन्तर होगा।

कोरसोरस † से ऐसे चित्र बना देते थे कि रात को लोग डर जाते थे ।

जगन्नाथजी की फूल-टोपी इतनी बड़ी होती थी कि उसमें एक आदमी छिप सकता था । इन्होंने एक दिन ऐसा प्रबन्ध किया कि स्वयं उस टोपी के भीतर जा छिपे । इनके छोटे भाई ने सब लोगों से कह दिया कि जगन्नाथजी की मदिरा देखो कि उनकी फूल-टोपी आप-से-आप चलती है । देखते-देखते टोपी भी आप-से-आप चलने लगी । सब लोगों को बहुत आश्चर्य होने लगा । अन्त में भारतेन्दुजी ने टोपी छुट दी और सब पर उस चमत्कार का रहस्य खुल गया । लोग हँसने लगे ।

पहली अमैल अंगरेज़ी में 'फूल-डे' (Fools day—मूर्खों का दिन) कहलाता है । दूसरों को इस दिन मूर्ख बनाने का प्रयास किया जाता है । भारतेन्दुजी ने कई वर्ष तक इस प्रकार के सफल प्रयत्न किये थे । एक बार इन्होंने बड़े धूम-धाम से विज्ञापन निकाला कि विजय-नगर के महाराज की कोठी में एक योरोपीय विद्वान् आये हुए हैं, जो सूर्य और चन्द्रमा को आकाश से पृथ्वी पर उतारकर सबको दिखलावेंगे । कोठी में काशी की कौतुक-मेसी जनता की बड़ी भीड़ हुई । पर जब वहाँ कुछ नहीं दीख

† एक रासायनिक द्रव्य को हवा लगते ही बल उठता है तथा उस को विषसे प्रकाश निक्षेपता है ।

पर जब हम सेदक ने 'र' खोला, तब उन्हें देखकर हैमता हुआ दीड़ा लौट आया: और जबने स्वामी से कहा कि 'बापू साहब' हैं। मित्र महाशय हटकर इनसे मिलने आये, तब इनोंने कहा कि पहले मेरा पैसा लाओ, जो तुमने मेरे लिये भेजा था। इस प्रकार हैमता-महाशय के बाद भीतर गये।

मारसेन्दुजी की वृत्त रचनाओं में इनके इस स्वभाव का परिपक्व चित्रण 'बधा-बदा पहर' काव्योत्तरी से यदि निराशा का दृष्टि मिलेगा। 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।

१९१०-११

१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।

१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।

१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।

१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।

१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।

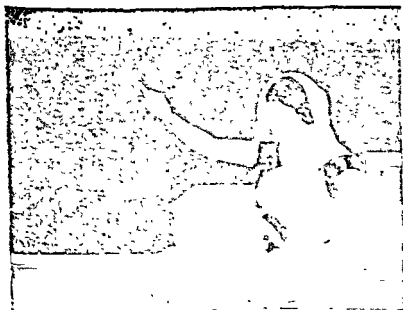
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।
१९१०-११ में 'बा' 'दा' 'पहर' 'दा' हैं।

नहीं किसी ने लाल बिछाये ।

मोती नहीं वहाँ फैलाये ॥

सागर के भी नहीं भाग हैं ।

नीली चिट्ठियों के न दाग हैं ॥



पके फलों का बाग नहीं है

मणियोवाला नाग नहीं है ।

देवों का ये अंश नहीं है ।

झाँक रहा जो कहीं-कहीं है

आसमान के नहीं शाल हैं ।

इछ लोटे हैं, कुछ विशाल है ॥

अभ्यास

॥ अर्थ वृत्तायो—लाल, चक्रफेरे, सब उसकी जाँतों के तारे, चंद्रमणि ।

६. निम्नलिखित पदों का अर्थ अपनी सरल भाषा में लिखो :—

‘कहीं दूर है, कहीं पास है।’

‘‘ਕੁਝ ਤਕਲ ਹੈ, ਕੁਝ ਤਦਾਰ ਹੈ ॥’’

‘छटा रात ने ही हंसते हैं।

लाखों में प्राचीन रहते हैं ॥'

५. "कल कलकल है कल कलकल है" तथा "अंधकार ने यह लोक बनाये"
 के नाम लगे हैं।

१६—ज्वार भाटा

[यह पाठ हाक्टर मईनाम का नाम का रचना है। आप
महुरा खिले में सनेमन नाम के निवास में हाक्टरों पास
करने के बाद आप सनेमन नाम का नाम के नाम के साथ
ही आपके देश और वहाँ का समय का समय में रहने का
मौजूबत है। इसमें आप का समय का समय का समय का
आपने समय का देश का समय का समय में रहे समय
लिखा है। आप में यह नाम का समय में आपके नाम
देश का समय का समय का समय का समय है।]

[illegible]

स्थल को धीरे-धीरे जो अनेक चमत्कारा लक्ष्य
हैं। तुम्हारे चित्त का आकर्षित करनेवाली समुद्र में अ

सकता । तू मेरे सामने क्यों डोंग हाँकता है ? तेरे मुँह पर जो कुछ झलक है वह सब मेरी हो चुका है । यदि मैं तुझसे विमुख हो जाऊँ तो किसी को तेरा मुँह भी दिखाया न दे । तेरा आकार ही कितना है ? अधिक से अधिक २,१६० मील ! तुझसे तो धरातल ही कई गुना बड़ा है । वह ८,००० मील है । तुझे लेकर धरातल क्या प्रसन्न होगा ? तू आकार में तो केवल उनका चतुर्थांश ही है ।”

यह सुनकर चन्द्रमा कहता है, “मैं चाहे जैसा हूँ ; परन्तु मैं तो निकट । क्या तूने नहीं सुना कि मित्र जिसके निकट रहता है वह उसका अधिक प्यार करता है ! उस दिन धरातल पर ‘व्यापारिय’ का एक सभा थी । उन्होंने एक घन्टे में मेरी तेरा दूरा का अनुमान लगाया था, और निश्चय किया था कि मूल १,००,००० मील दूर है । मैं चाहे जैसा हूँ ; परन्तु तीन दिन धरातल को आकर्षण करना मेरा ब्रह्म है । आर में इसे क्याशक्ति कभी न छोड़ेगा ।”

इस तरह इन दोनों की भगदनें देख धरातल मुसकराता है और कहता है, “क्यों तुम नक़्क़ार करने हो ? तुम दोनों हाँ के प्रेम का मैं हूँ नही हूँ । मूल महाराज का कृपा के लिए मैं सबदा उनकी परिकल्पना करता रहता हूँ :

● १९५५ ई. १०-११-१२ ई.—श्रीलंका के राजा जयवर्धन राव जयवर्धने

दिन में दो बार उदारा-भाटा होता है । अमावस्या और पूर्णिमा को जल का स्थान अद्विज और भृगुमी का कम होता है । अमावस्या और पूर्णिमा को सूर्य-चन्द्र दोनों की आकर्षण-शक्तियाँ मिलकर जल गीबती हैं और भृगुमी को केवल चन्द्रमा रह जाता है ।

[illegible][illegible]

राज कोकर बोली, "बसाराध, यह बड़ा बड़ा लड़का है, इसके किसी अपराध पर ध्यान न दीजियेगा।"

राजराज ने कहा, "बोर्नो किन्ना गयी, यह बड़ा योग्य लड़का है। इसकी मरुति से दिल हुआ मेरे किसी अपराध का जहाज में भेजा जाये।"

इसकी मरुति ले ली। बोली, "यह लोको का राज-कोर है और इससे दक्षिण राजा का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये है।"

राजराज ने कहा, "राजराज का हुक्म अग्निह न होना, इस लोको अपराध का जहाज में भेजा जाये।"

इसका बड़ा राजराज का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये। राजराज ने कहा, "यह लोको का राज-कोर है और इससे दक्षिण राजा का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये है।"

इस लोको का राजराज का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये। राजराज ने कहा, "यह लोको का राज-कोर है और इससे दक्षिण राजा का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये है।"

राजराज ने कहा, "यह लोको का राज-कोर है और इससे दक्षिण राजा का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये है।"

इस लोको का राजराज का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये। राजराज ने कहा, "यह लोको का राज-कोर है और इससे दक्षिण राजा का साहाय्य में बन्दी बन्धे गये है।"

जबकि यही सातक हमी ज्ञानम 'सातक' की संज्ञा प्राप्त
 हो, तबवही सातक 'सप्तमः मोक्ष' दुष्मा की ईसा को हर
 कर पड़े भगवत में सातलपुत्र को सात-तिहायन पर ईसा :

515 477168

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

4132

1. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
2. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
3. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
4. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
5. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
6. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
7. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
8. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
9. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。
10. 凡屬我國人民，均應遵守法律，不得有違法行為。

हैं। जब विपत्ति के बारे में उन्होंने स्वयं बात करने का आग्रह किया था, जिसकी मर्यादा पुरुषोत्तम ने श्रेय दिया था। कहते हैं, जब भी शरद-पूणिमा के दिन दमा से पीड़ित कोई २५ हजार आदमी मनोकायना पूर्ण करनेवाले कामनाय की सहायता चाहते हैं। गिरिराज विश्वरूप ही का दूसरा नाम कामद या कामशानाय है। इस पर्वत के अनेक जड़ी-पुटियाँ पैदा होती हैं, जिनसे रोगों से कई लोग दूर हो जाते हैं।

[illegible]

करी है। वहाँ पर हुंगारराय पर्वत है, वहाँ से समस्त
 हिन्दू स्थान बतलाया जाता है। कुछ दूर तक घुम्दी के
 भीतर-भीतर बाने के दायाँ दमै गुप्त-गोदावरी भी बहते
 हैं। इस नदी के दर्शन के लिये मराल जला कर पीरे
 से पुम का जाना पड़ता है। यहाँ गिरि नाम का एक
 पर्वत भी है, जिसे जटाघुषा आश्रम कहा जाता है।
 विष्णु-आश्रम से लिया है—विष्णु पर्वत के उत्तर में
 समेद नामक तीर्थ है, वहाँ पर सीताजी ने दुर्गा देवी
 स्थापित की थी। उस स्थान को दुर्गा पर्वत कहते हैं।
 इसके उत्तर में हठ का आश्रम है, जिस पर जटाघुषा नाम
 के हठराज ने बहुत रूप दिया था।

विष्णु की परिग्रहा रायः पार भीत की है।
 किसी पर्वतग ने उसे रदी बगला दी है, जिसमें रदी
 मरुत पर बहने का आनन्द आता है। रदार-नदार पर
 समेद स्तिर बने हैं, जो पर्वत पर रजा और रीरी के
 राजाओं के ब-रावे हुए बरह से बने हैं। इसके रजा के
 राजा अलग की विशेष लक्षण हैं। राजा अलगविह
 रहे रदी का से। रज रज के रज रज के रज है।
 “रही रज राजः रजः, रज की रज रज” रज रज
 बाना है। रज राज की रज से रज रज की रज रज।

विष्णु के रज रज रज रज के रज है, रज
 रज के रज रज की रज है। रज रज, रज रज

4

1

जब यहाँ की बातें यहीं रहने दें और परिक्रमा को फिर लौट चले । कामधनाथ के मन्दिर के पश्चात् भरतमिलाप का स्थान मिलता है, जहाँ पर रामचन्द्रजी के पदचिह्न पहात पर अंकित दृष्टलाग्ये जाते हैं । मन्दाकिनी नदी के एक कूल पर एक धारा का नाम जानसी-कुण्ड है, जहाँ मोटाजी स्नान किया करते थे । वहाँ की पहात पर भी पद-चिह्न है, जिन्हें मोटाजी के धरण कहते हैं ।

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ה'תש"ח

और जहाज़ियों के रहने के स्थान भी बना दिये । बनानेवाले के नाम के अनुसार ही नये गुब्बारे का नाम 'जैपलिन' पड़ा ।

एक ओर लोग गुब्बारे में सुधार कर रहे थे, दूसरी ओर कुछ आदमी ऐसा हवाई-जहाज़ बनाने की धुन में थे जिसमें गुब्बारे की तरह गैस भरने की जरूरत न हो ; बल्कि जो चिड़ियों के सदृश डैनों के सहारे उड़े । गुब्बारा गैस भरकर उड़ाया जाता था, इसलिए उसका आकार भी बड़ा बनाना पड़ता था । बहुत सुधार करने पर भी उसमें कई एक ऐव थे ।

अठारहवीं शताब्दी के अन्त में जर्मनी के अष्टाचट और अमेरिका के लिनीयन्यल नामक वैज्ञानिकों ने इस तरह के हवाई-जहाज़ बनाने की कोशिश की । लिनी-यन्यल को कुछ सफलता भी मिली ; किन्तु एक बार हवाई-जहाज़ बिगड़ जाने के कारण वह पृथ्वी पर गिर कर भर गया । फिर इंग्लैंड के प्रसिद्ध आविष्कारक सर हिरम-मॉक्सिम ने भी चेष्टा की, कुछ सफलता भी पायी ; पर विशेष लाभ न हुआ । इसी प्रकार अमेरिका के मोफ़ेसर लॉगने ने वहाँ का सरकार से माड़े मात्र लाख रुपया लेकर हवाई जहाज़ बनाने का बाड़ा उठाया ; पर बेचारे असफल रहे ।

आखिरकार इस दुष्ट के हवाई-जहाज़ बनाने में

सरकार ने भी इंग्लैंड से भारत तक हवाई जहाज पर डाक होने का प्रबंध कर लिया है ।

पाठ-सहायक

इन चित्रों काम के करने में अनुपम को जो समझ बन जाती है उसे इन करते हैं । चिह्नियानुमा = चिह्निया की तरह । जिस चीज की तरह चिह्निया की तरह होती है उसे चिह्नियानुमा करते हैं । इसी प्रकार वे दुर्दैव जो-जो समझ निचे हो उन्हें चिह्नियो ।

अभ्यास

1. अपने दशहस्तों और इनका प्रयोग करने वालों में करो—देव, ब्राह्म बनाने का बीड़ा उठाया, दुर्धरनाथो, धर्मराज निम्ना ।
2. चर्मनी, अमित्र और पेरिस का है । इन देशों के किन्-किन मनुष्यों में हवाई-जहाज बनाने में व्यवसाय प्यारी है ।
3. प्रयोग बाल के और आकृषक के हवाई-जहाजों में क्या करता है ।
4. जिस देश के हवाई-जहाज का नाम मनुष्य है और उसका नाम क्या प्यारी पता ।
5. विदेश के इस बड़ा मनुष्य हमको है तो । वह किस देश में है चिह्नियानुमा है का नाम और चिह्नियो ।
6. विदेश के इस मनुष्य का चिह्नियानुमा मनुष्य होता है उस देश को मनुष्यात्त में क्या करते हैं ।

२०—मधु-मञ्जरी

[इनके लेखक का नाम श्री रामदास शर्मा, बनारस, हिन्दू विश्वविद्यालय (बनारस) के प्राध्यापक हैं । इनका जन्म हुआ प्यारी प्यारी, १९११ ई. में हुआ था । इनका पिता के नाम हैं श्री रामदास, बनारस, विद्यापीठ के लिये का नाम है रामदास । इनके पिता के नाम हैं श्री रामदास, बनारस, विद्यापीठ के लिये का नाम है रामदास । इनके पिता के नाम हैं श्री रामदास, बनारस, विद्यापीठ के लिये का नाम है रामदास ।

जब तक काम न पूरा होता,
कमी नहीं सुसवाती है !

“क्या करना है मुझे ?” बात यह,
ब्रह्मा ! जानती है मत्प्रेरक ।

छुद्र जीव हैं ये सब तो भी,
इनमें कितना भरा विवेक ॥

होय बात के बात दिने है,

हम-हमारे हा मरि

हम-हमारे हा मरि

हमारे हैं, हमारे हा मरि

री । अनुराग = प्रेम । निर्माण = बनाना । विषेक = शान । उष्णदिन = गर्म दिन । सार = तत्व ।

अभ्यास

१. अर्थ बताओ—माता, कला-कुशलता, महान ।
२. अर्थ बताओ और अरने वाक्यों में प्रयोग करो—सुसंवाती है, लुप्त जीव, ग्रीष्मकाल, कर्तव्य-कर्म-व्य-अष्ट, कर्मवीर, अल्प-ज्ञान पूँजी में ।
३. मधुमक्खियों के परिभ्रमी होने का संसृत दो ।
४. मधुमक्खियाँ किस प्रकार मधु इकट्ठा किया करती हैं ?
५. मनुष्य की उत्पत्ति में कौन सी वस्तु बाधा डालती है ?
६. परिभ्रम करना मनुष्य को किन-किन जीवों से सीखना चाहिये ?
७. इस पाठ में आए हुए विशेषण छोटो लो किसी संज्ञा या संज्ञेनाम की विशेषता प्रकट करते हैं ।

२१—सर गङ्गाराम

[इस पाठ के लेखक पण्डित बनारसदास पतुर्वेदी, फिरोजाबाद, जिला आगरा के रहनेवाले हैं । आजकल हिन्दी के प्रसिद्ध गद्य लेखकों में हैं । इन दिनों वे कलकत्ते के 'विशाल भारत' नामक मासिकपत्र के सम्पादक हैं । आप साहित्य द्वारा अच्छे विचारों के प्रचार का एक उत्तम समझते हैं और अपनी भाषा के पुराने लेखकों और कवियों का सम्मान कराने का बराबर प्रयत्न किया करते हैं । आपने स्वर्गीय पण्डित सत्य नारायण कविवर्य के एक अमूल्य जीवन लिखा है और कुछ कम लेख तो मैकडाल ने भी हैं । आपने एक दुर्लभ सर गङ्गाराम का आचरण आपके पत्र में जहाँ में संज्ञा है । इसके पढ़ने से यह 'वर्द्धित' होता है कि मामूली 'मनुष्य' में पैदा होकर भी मनुष्य अपने कर्तव्य से किस तरह बड़ा 'पुरुष' बन सकता है और कैसे दूसरों का हित कर सकता है ।]

बिला शेखपुरा में हुआ था। आपके पिता लाला दौलतराम जी इस वक्त अमृतसर में कोर्ट-इन्स्पेक्टर थे। लाला दौलतरामजी वास्तव में हमारे संयुक्तप्रान्त के सहारनपुर जिले के रहनेवाले थे और पीछे से पंजाब में जा बसे थे। एण्ट्रेन्स पास करने के बाद सर गंगाराम टायसन-कालेज, रुड़की में दाखिल हुए और वहाँ से १८७३ ई० में इञ्जीनियरी में उत्तीर्ण होकर लाहौर में इञ्जीनियर नियत हुए। कहा जाता है कि उन्होंने उसी इञ्जीनियर से आफिस-चार्ज लिया था, जिसने उन्हें कुर्मी पर से उठा दिया था।

आपने बड़े परिश्रम के साथ अपना कार्य आरम्भ किया, जिससे सरकार आरक्षक योग्यता पर मुग्न हो गयी, जब सन् १८७५ ई० में प्रिन्स आफ वेल्स भारत में पधारे तब पंजाब-सरकार ने लाहौर में उनके स्वागत का प्रबन्ध श्रीगंगाराम को सौंपा। सन् १९०० के शाही दरबार के सुपरिण्टेण्डेण्ट आप ही बनाये गये थे और इसी अवसर पर आपकी मो० आई० ई० की उपाधि मिली थी। सन् १९१२ ई० के शाही दरबार का प्रबंध भी आपकी सौंपा गया था और उसके उपलक्ष्य में आपकी एम० बी० आ० की उपाधि मिली थी। इसके सिवाय लाहौर की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतों की परम्परा का काम भी १९ वर्ष तक आपकी देख-रेख में हुआ था। लाहौर के राजकुमार-

अपने ज़मीन का एक टुकड़ा और दे दिया। आपने
 बर में मशीन लगाकर पानी को ऊपर उठाया और
 इञ्जनों के द्वारा सारी ज़मीन को पानी से तर कर
 दिया। बंजर ज़मीन लहलहा उठी। यह देखकर गवर्नर
 बेष्ट ने इसी तरह की ज़मीन के ४७ मुरब्बे और दे
 दिये। इस ज़मीन को भी सर गंगाराम ने इञ्जनों और
 मशीनों की मदद से जलमय तथा उपजाऊ बना दिया।
 उस फिर क्या था ? खेती के कारण लक्ष्मी आपकी चेरी
 बन गयी। उस ज़मीन के आस-पास गाँव-पर-गाँव आबाद
 होने लगे। बिजली के कारखाने जारी होने लगे। अब
 आप जाकर वहाँ देखें तो छोटे-से-छोटे किसान के भोपड़े
 में भी बिजली की रोशनी दिखायी पड़ेगी।

जब सर गंगाराम इस तरह से मालामाल होने लगे
 तब उन्होंने दान-पुण्य द्वारा अपने धन का सदुपयोग करना
 शरम्भ किया।

सब से पहले आपका ध्यान विधवाओं को दुर्दशा
 की ओर आकर्षित हुआ और आपने उनके लिए एक
 सहायक सभा की स्थापना की। पंजाब में ही नहीं बंगाल,
 उड़ीसा, संयुक्तप्रान्त इत्यादि में भी उस सहायक सभा
 की शाखाएँ खुल गयी हैं। आज सर गंगाराम की दान-
 शीलता के कारण २५, २६ हजार रुपया प्रति वर्ष इसी
 पुण्य कार्य में व्यय हो रहा है।

वे रणपुर गाँव में संवत् १५५४ में पैदा हुए थे। वे घर-
 बैठकर राम के भक्त हो गये थे और जब तक जीवित रहे
 रामचन्द्र का गुण गाते रहे। उनको रची हुई पुस्तकें सब
 से बहुत मिली हैं। उन पुस्तकों में रामचरित-मानस के अतिरिक्त
 दोहावली, कृष्ण-भोवावली, कवितावली, विनय-पत्रिका, दोहावली,
 ब्रज-मंगल, पार्वती-मंगल, परबै-रामायण आदि बहुत प्रसिद्ध
 हैं। उन्होंने संवत् १६८० में काशी में शरीर त्यागा था।

नीचे 'दोहावली' से कुछ चुने हुए दोहे दिये जाते हैं।
 इनसे मिलनेवाली शिक्षा अमूल्य है।

बुझसो मोठे वचन तैं, सुख सपजत चहुँ ओर ।
 बसोकरन यह मंत्र हैं, परिहरु वचन फठोर ॥ १ ॥
 आपु-आपु कहैं सब भलो, अपने कहैं कोइ-कोइ ।
 तुलसी सब कहैं जो भलो, सुजन सराहिय सोइ ॥ २ ॥
 तुलसी कबहुँ न त्यागिये, अपने कुल की रीति ।
 लायक ही सों कोजिये, ब्याह, वैर अरु मोति ॥ ३ ॥
 भावत ही हर्षे नहीं, नैनन नहीं सनेह ।
 बुझसो तहाँ न जाइये, कञ्चन बरसे मेह ॥ ४ ॥
 तुलसी जो कोरति चहहि, पर कीरति को खोय ।
 विनके मुख मति लागई, मुपे न बिटिई घोय ॥ ५ ॥
 नीच चंग सम जानिये, सुनि लखि तुलसीदास ।
 बोलि देत मदि गिरि परत, खँचत चढ़त अकाम ॥ ६ ॥
 नीच निचाई नहि वज्रत, जो पारै सतसंग ।
 तुलसी चंदन बिडप बसि, विष नहि वज्रत सुजंग ॥ ७ ॥

२३-गोपाल-सखा

[इस नाटक के लेखक परिचित रामचन्द्र शुक्ल, एम० ए०, बी० ए० हैं। वार सरयूपारी माझण हैं। पहले आप काशी के लोकोचिन्तन स्कूल में अध्यापक थे। आजकल कानपुर के नरहृन्-हाई-स्कूल में हेडमास्टर हैं। शुक्ल जी 'नवयुग' नामक पत्र के सम्पादक भी थे।]

इ नाटक एक पत्र से हो लिया गया है। भगवान् का मन शुद्ध हृदय और प्रेम से ही सम्भव हो सकता है। अपनी जी भी धाव का अभिमान करने से वह कभी भी हम पर क्रुधा कर सकते। यही इस नाटक का लक्ष्य है।]

पहला दृश्य

[किसी गाँव का एक काषात्य पर। कृष्ण की मूर्ति। एक हिन्दू या चर्चा बात रही है। एक लड़का बैठा कुछ लेट रहा है।]

पद्मा—(गाती है)

हे नाथ निज रूप हमको दिखाओ ।

तुम पास आओ या हमको बुलाओ ॥

मनचन्द, लिपिये न घन श्याम में अब ।

ज्योत्स्ना दिखाओ, मुखा को पहाओ ॥

पुष्पों को अपनी ऐसी दान देकर ।

हुल तुम ऐसी, हुल हमें भी ऐसाओ ॥

परलों के सुलों को नद फूल कोने ।

करके मुमन को सुफल प्रसन्न बनाओ ॥

बालक—माँ, पढ़ने कर दिखाओगी ।

का । वे आज भी पाठशाला न आयेगे । मैं भी आज न आऊँगा । तुम्हें बड़ा डर लगता है ।

माँ—बेटा, डर नहीं । मैं तुम्हें पहुँचा आया करती थीरूँ जाया करती, पर फिर घर का काम खूँ लेंगा ।

खेखो—हाकी, तुम्हें भेज दो, भेज से कह देना । गोपाल भैया के साथ पाठशाला जाऊँगे, मैं नहीं डरती ।

माँ—(हँसकर) चल पगली, तू बड़ा जापगी । तुम्हें डर पर पड़ा दूँगे । (गोलाल से) पर बेटा गोपाल, एक लड़की भूल ही गयी थी । जंगल में डर काई का । हुन्दा-हवाली छुप-छुपाती थी जंगलों में बालकों की रक्षा के लिये ही करते हैं, वहाँ को पुकारना । वे तेरी रक्षा करेंगे । आ, तुम्हें एक नया गाना सिखाऊँ (गाती है)

खेखो रे कर्नैया संग में हमारे ।

बसुन्दा के प्यारे, नन्द-दुलारे ॥ खेखो० ॥

हिय में बसो हम, मन में रखो हम,

दरस दिखानो प्यारे ।

हम बिन कौन शीव-शीवन को,

जाहि गोपाल पुकारे ॥ खेखो० ॥

गोपाल—(गाती है) खेखो रे कर्नैया, संग में हमारे ।

माँ, बस छुप-छुपा सबकुछ मेरे नाद-साद

करेंगे ।

है। इन्के कुछ के जाना चाहिये। माँ ने कहा था कि
अम्बा जी से ही कुछ पाँग लेना। सो मैं भूला ही जाता
था। अबेर भी हो रही है।

कृष्ण—मचमुच ? तुम्हारी माँ ने मुझ से पाँगने को
क्या था ? मैं बनवासी चरवाहा भला क्या दूँगा ?
अम्बा, ठहरो, जाकर कुछ लाता हूँ। (जाते हैं)

गोपाल—(गाता है)

कैसो खेल रच्यो बनवारी ?

दिन में छिपत दिनहि में मगटत

घोहत बुद्धि हमारी ॥ कैसो...

हारत आप जितावत हमको

दोनन के हितकारो ॥ कैसो...

कृष्ण (एक मटकी लेकर जाते हैं) लो, और क्या
है, यही दही की मटकी ले जाकर दे देना। देखो, अब
गाँव तक आ गये आगे मैं न जाऊँगा।

गोपाल—यादो दूर और चलो।

कृष्ण—नहीं भाई।

गोपाल—अम्बा, न चलो तो खेजो ही।

कृष्ण—नहीं भाई गोपाल, अब देर हो रही है।

तुम जाओ, मैं अपने बन को लौट जाता हूँ।

[गोपाल जाता है, कृष्ण हाथ ठककर आँखें मूँदते हैं और
सुस्तो बजाते हैं]

[ग्यहने]

खिरे, मैं फिर पुकारता हूँ । (पुकारता है) भैया फर्ग्यो !
 भैया फर्ग्यो ! आओ हम तुम खेहें ।

[भैया नहीं आता । जदरेय उठते हैं, कुछ देकर जाने लगते हैं ।]

दोसाल—(फिर पुकारता है) नहीं आओगे ! नहीं
 आओगे ! सुभे गुरुदेव धी रहि मैं भूला सिद्ध करोगे !
 एक बार, हम एक बार और आओ ; अब मैं हमसे कुछ
 कहूँगा ।

(गुरु गिरधर उठती बार देखते हैं ।)

[गुरुदेव—आओ दोसाल ! मैं नहीं आ सकता । जदरेय
 जदरेय के लड़ दिता है, वह उनके गुरुदेव से प्रेम नहीं है । उनके
 लड़के गुरुदेव नहीं हो सकते ।]

(जदरेय और दोसाल दोनों : लड़क प्रत्यक्ष करते हैं ।)

[आगे]

तीसरी दृश्य

[जदरेय आगरे : आगरे के देर हो जाते हैं । आगरे के आगरे
 दब आगरे देर आगरे आगरे आगरे आगरे]

जदरेय आगरे—देख, हम बारी दो आगरे दिता
 हो ! मेरा आगरे आगरे हो और हमें आगरे जदरेय हो
 आगरे हो आगरे हो ।

देख—नहीं जदरेय, हमें आगरे आगरे हो आगरे हो
 आगरे हो आगरे हो और आगरे हो आगरे हो आगरे
 आगरे आगरे हो ।

जदरेय—आगरे, आगरे, आगरे ।

ब्रह्मदेव—चलो, चलो, सभी भक्तमवर बालक गोपाल के नाम जाऊंगा। सभी के सत्संग से भगवान को प्राप्त करूंगा ! वह आ रहा है, वह आ रहा है, (पुकारते हैं)—गोपाल ! गोपाल !!

गोपाल—(आता है) आप हैं गुरुदेव ! आप कहाँ फिर रहे हैं ? हम सब विद्यार्थी आपके बिना व्याकुल हैं। (चैतन्य की ओर देखकर) भैया, प्रणाम।

गुरुदेव—प्यारे गोपाल, गुरु तू है और शिष्य मैं हूँ। क्या तो, प्यारे श्रीकृष्ण से तुझे किसने मिलाया ?

गोपाल—गुरुदेव, मैं कुछ नहीं जानता। मेरी माता ने ही मुझे कृष्ण-प्रेम सिखाया है। चलिए, वहाँ से पहुँचेंगे। चैतन्य भैया, आप भी आइये।

[पटाक्षेप]

छठा दृश्य

[गोपाल का घर। कृष्ण मूर्ति के सामने ब्रह्मदेव, चैतन्य और चनेला के साथ गोपाल की माता आती है।]

माता—आचार्य, मैं बेचारी क्या जानूँ ? इसी मूर्ति के सहारे मैंने भगवान् का प्रेम पाया और वही इस बालक को सिखाया। आइये, हम सब प्रार्थना करें।

(सब गाने हैं)

हे नाथ निज रूप आपको दिखाओ। (इत्यादि)

[पटाक्षेप]

काव्य, गौरव-भाषा (चार भाग), विचित्र विज्ञान और महकते
 कों में सुख है । नीचे लिखा पठ 'महकने मोती' से लिया गया
 है । इसमें जो कहानी दी गयी है, वह संस्कृत के 'द्वितीयदेश'
 नामक प्रसिद्ध पुस्तक के आधार पर लिखी गयी है । इस कहानी
 में देने पर यह ज्ञात होता है कि अपने ऊपर भरोसा करनेवालों
 में मोटा देनेवाले को इसका फल पूरी तरह से भोगना पड़ता है ।]

यंगम देश में चम्पकवती नामक एक बहुत बड़ा बन
 था । उसमें हरिण और कौआ दो बहुत पुराने मित्र रहते
 थे । एक दिन किसी मृगाल की दृष्टि उस मोटे काने मृग
 पर पड़ी, जिसे देखते ही उसके मुँह में पानी भर आया ।
 मोर सोचने लगा, "कहा ! किसी प्रकार इस हरिण
 को पास खाने को मिले तो क्या हो अच्छा हो ! अच्छा,
 मैं जापगा, पढ़े इससे मेल-जोल तो पैदा करेंगे ।"
 उनके अनन्तर मोर हरिण के पास जाकर बहने लगा,
 कलिये मित्र, अच्छे हो हो ।" हरिण बोला, "कौआ,
 मैं बौन हो और कौआ से क्या हो ! आज बरस बार
 हा हथारे दर्शन हुए हैं ।" मोर कहने लगा, "मित्र मैं
 एरुद्ध नामक मृगाल हूँ । अब तक बिना किसी काटो
 के इस बन में रह रहा था । आज आजको लखर
 हमें तो आनन्द बह रहा है, उनका मैं दर्शन नहीं कर
 सका । इस समय ऐसा शरीर होता है, कौआ मैं
 कोपकायुक्त भाव में निरन्तर मृगाल-दृष्टि करने में
 लगा होता है । मित्र, मैं तो आरंभ प्रथम दर्शन में ही

जब जन्मी अपने आग से थोड़ा-थोड़ा उसे दे देते, तबसे हमके खाने-पीने का काम चल जाता था। किन्तु मय्य दीर्घवर्ण नामक एक बिलाव पंक्तिओं के बच्चों को खाने की इच्छा से उस वृक्ष पर आया। बिलाव को आता देख चिड़ियों के वंश मय्यपीत हो चहचहाने लगे। वृक्ष कोलाहल को सुन गिद्ध बोला, “अरे! कौन आता है?” गिद्ध को देख बिलाव घबरा गया। वह मोचने लगा, “हमके आगे से मैं भाग तो सकता नहीं। अब तो जो होगा सो देखा जायगा। लाओ पहले इसके समीप चलकर मेल पैदा करूँ।” बिलाव गिद्ध के पास जा बड़े विनम्र भाव से बोला, “महानुभाव, आपको प्रणाम करता हूँ।” इस पर गिद्ध ने पूछा, “तू कौन है?” वह कहने लगा, “महाराज, मैं दीर्घवर्ण नामक बिलाव हूँ।” बिलाव का नाम सुनते ही गिद्ध क्रोधपूर्ण स्वर में बोला, “अरे, तेरा यहाँ क्या काम! यहाँ से जल्दी भाग, नहीं तो अभी तेरी खबर लेता हूँ।”

गिद्ध को क्रोध देख पहले तो बिलाव सिटपिटा गया; परन्तु फिर कुछ सावधान हो बाला, “महाराज, आप पहले मेरी प्रार्थना सुन लें, उसके पश्चात् यदि मुझे दण्डनीय समझें तो अपरिहार्य दण्ड दें।” इस पर गिद्ध ने कहा, “अच्छा, जल्दी कह, क्या करता हूँ।” बिलाव कहने लगा, “महाराज, मैं यहाँ गङ्गा-तट पर चन्द्रायण व्रत

जिन पत्नियों के बच्चे खाये गये, उन्हें बहुत दुःख
 हुआ। वे अपने बच्चे खानेवाले को खोज करने लगे।
 पिता को जब इस बात का पता लगा, तब वह चुनचाप
 गेद के कोटर से निकलकर चलता बना। ऊपर पत्नियों
 के दिव के पर में अपने बच्चों की हड्डियां पड़ी देखीं,
 वे समझे कि इसी दुष्ट ने हमारे बच्चे खाये हैं। फिर
 कहा या, सब ने एकत्र हो उसपर हमला कर दिया और
 उसे मार डाला। इसलिए मैं कहता हूँ कि अनजान
 व्यक्ति से सहसा मित्रता नहीं करनी चाहिये।

शौए की बात सुन गोदट्ट कहने लगा, “माई, जिस
 दिन हमारी और हरिण की मित्रता हुई थी उस दिन
 हम भी परस्पर एक दूसरे के लिए अनरिचित हो रहे
 होते। फिर हमने मित्रता क्यों की और अब हमारी
 वैसी दिनों-दिन कैसे गाढ़ी होती जाती है। मित्र, मदद
 करने के समय हो सभी आदम में अनरिचित होते हैं।
 यदि वे परस्पर सम्बन्ध स्थापित न करें, तो एक को
 दूसरे के स्वभाव और गुण आदि का ज्ञान कैसे हो।
 फिर तो जन्तु में कोई किसी के काम सदा की न हो।
 वस्तुतः, मैं तो समझता हूँ कि जिस प्रकार हरिण को
 मित्र है, वही प्रकार हम भी हो।” इस तरह सदरिवाद
 के बाद दोनों ने निरुद्धा कर ली और वे एक ही घर
 सुखपूर्वक रहने लगे।

अपराध के दिन ब्रती होने के कारण मैं ताँत के घने
 जाल को दाँतों से नहीं छू सकता। अब रात तो
 किसी तरह बिताओ, सबेरा होते ही मैं आकर जाल
 काट दूँगा।” इतना कह गोदड़ वहीं एकान्त में छिपकर
 बैठ गया।

सबेरा होते ही प्रति दिन की भाँति जब हरिण
 अपने स्थान पर न पहुँचा, तब कौए को बड़ी चिन्ता
 हुई। वह उसकी खोज में इधर-उधर उड़ता हुआ उस
 नेत्र में भी पहुँचा। वहाँ अपने मित्र हरिण को जाल में
 फँसा देख अत्यन्त दुःखी हो पूछने लगा, “क्यों भाई,
 गोदड़ कहाँ गया ? क्या उसने जाल से मुक्त करने के
 लिए तुम्हारी कुछ सहायता नहीं की ?” इस पर हरिण
 ने गोदड़ की सब बातें कह सुनायी। कौआ बोला,
 “भाई हमने उस नीच को पीठी-पीठी बातों में आकर
 इसे अपना मित्र बनाया, उसका फल भी हाथों-हाथ
 पाया। पान्थु खैर, अब भी कोई चिन्ता की बात नहीं।
 हम हाथ पैर ढोले करके पेड़ फुलाकर बैठ जाओ, जिससे
 किसान तुम्हें मरा सम्झ लापरवाही में खोलकर ढाल
 देगा। उस समय जब मैं आवाज़ दूँ, तभी तुरन्त उठकर
 भाग जाना।”

हरिण ने ऐसा ही किया। दो-दो देर में किसान भी
 वहाँ आ गया। उसने मृत को मरा जान, पर लाते हुए

जहाँ कालो और काले बालों में इनका प्रवेश करो—आरका
 काल नष्ट कर दगा। विहिनों के बड़े मरनीय हो परधारी
 करो। 'अहिता बाले बाले' (अर्थात् अहिता प्रजन वर्ग है।)
 अहिता बाल और अहिता बाल विहिनों में क्या अंतर है।
 अंतर देखा लड़ करो।

२४-हेमन्त

[इस कविता के रचनेवाले परिचित गिरिधर शर्मा हैं।
 यह काल अष्ट शुक्ल कलनों, संवत् १९१८ में रायपुराने के
 जय-बादन शहर में हुआ था। काल हिन्दी के अनेक कवि
 इसके साथ ही थे संग्रह और सुदराजी में भी कविता
 में है। साथ ही हर्ष, नराजी और बंगाली भाषा भी जानते
 काल कल्याण भी कल्या देते हैं। कालने देसी शायरी में
 ही के प्रचार का विशेष प्रयत्न किया है। कालने बहुत ही
 ही हिन्दी हैं। हममें से कुछ से हैं—आचार शिवा, अहिता
 अहिता, अहिता, अहिता, अहिता, अहिता, अहिता, अहिता,
 अहिता।]

यह हेमन्त काल है आका;

हमने अपना घर दिखाया।

हर दिन-भान पय जग है,

राजि-भान बड़ा आका है ॥

सपन, मनोर, अहिता आका,

हिन्दी-हिन्दी का हिन्दी है आका।

उनमें से कुछ खुद भी खाते;
 बैयराज यों मजे उड़ाते ॥
 कभी कुरुर जर खा जाता है,
 कुछ भी नहीं छोड़ जाता है ।
 यद्यपि मूर्खोदय हो जाता,
 तदपि न शीघ्र दिनेश दिखाता ॥
 मूर्खोदय पारहे जो नाने,
 उष्ण सलिल क्षणों में पावे ।
 खरते नहीं मनुज जो मुस्ती,
 उनकी टाल मृदुति भी करती ॥

पाठ-सहायक

दिव्यदर्शन = दृष्टि की शक्ति । कुरुर = जल के पतन करने
 का समूह जो लटक पावर बाहु की भाँति से लगे रहता है । दिनेश =
 दूर । पाठ = सेवा कीर । मनु दीर्घ वस्तुओं से बना हुआ दुष्टि
 करावे ।

अन्वय

१. लज से किसी वस्तु से होती है । ऐश्वर्य वस्तु जिस करने से होती
 है । और इसे कि वस्तु से करिष्य वस्तु बना होता है ।
२. ऐश्वर्य वस्तु से कि वस्तु लज करने पर बन जाते हैं ।
३. ऐश्वर्य वस्तु से जाने से करने से कि वस्तु बना हुआ कि
 करने ।
४. ऐश्वर्य वस्तु का करने से ।
५. दूर से लज करने पर बन जाते हैं ।

राना ने हामा को कहला भेजा कि हमारी अधीनता में हमारे यहाँ चित्तौर में रहा करो । हामा ने उत्तर दिया कि घुँदी का राज्य मेरे पूर्वजों ने खड्ग के बल से जीता है । मैं किसी के अधीन नहीं । परन्तु आप बड़े हैं । कहिये तो होली-दिवाली पर आ जाया करें । इससे अधिक आप मुझसे आशा न रखें ।

चिचौर के राना को यह उत्तर बहुत अमिय लगा ।
 उन्होंने पैंदी पर चढ़ाई कर दी । पैंदी में कुछ इधर ही
 एक स्थान निमोखिया नाम का है । सैन्य समेत राना ने
 वहाँ ठेरा राला । दूनों ने इस लड़ाई का संवाद शान्त हो
 पहले पहुँचा दिया था । समने घुन हुए कोई पाँच हज़ार
 पोधा अपने साथ लिये । व ला । चुपचाप बड़े धरें के
 सनके आने का समाचार तक राना को न मालूम हो
 पाया । राधा ने रात के समय बड़े ही रहस्य के
 राने के ठेरे पर लाया था । इधर लोग निकलने के
 लगे थे । राधा के आदेशों का वे न मालूम । राधा
 ने सब मायियों ने राना के माँहों में कुछ दवा
 डाली । सब वे भाग पड़े । राना ने सब को
 मार डाला । फिर चिचौर तीर में आकर बैठे ।
 राधा ने भी वहाँ पहुँचे हुए थे । राधा ने राना को
 बतलाया । राना सब लोग मार डाले ।
 राधा ने सब को मार डाला ।

एक मैदान में घुँदी के दुर्ग थी एक मिट्टी की नक़ल
सुरन्त हो तैयार की गयी । उनमें ही फाटक, छतने ही
झुर्ज़ उसी तरह की और बारी घड़ी मय जगहों । लड़कों
का मा धनूना मिलाईना बन गया और रानाजी के पावे
थी राह देखने लगा ।

पूँदा ये जिस हाटा जाति के राजपूतों का राज्य था, उसी जाति के लोगों का एक हुकड़ा चित्तौर में भी था। वह रानाजी के आश्रित था, उन्हें यी सेना की एक भाग था। कुम्भा बैरमी नाम का एक हाटा उसका प्रधान था। अविनश्यता का दोष्य वह झूठे करने गया था। उसने अंगन में एक हवन भाग। उसे पीठ पर डाल कर वह चित्तौर की लोटा मार्ग में समने दुर्ग की वह जहल बनवा दिया। हम वहाँ पहुँचल हुआ हमने वहाँ के प्रधान से हमने पूछा -

12 21 40 6- 11 1

२ २ - ३८१ ५ ६००० ५० ६० १०० १

[illegible]

१. १५०० २००० ३००० ४००० ५००० ६००० ७००० ८००० ९००० १००००

292

१७५३

3 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100 101 102 103 104 105 106 107 108 109 110 111 112 113 114 115 116 117 118 119 120 121 122 123 124 125 126 127 128 129 130 131 132 133 134 135 136 137 138 139 140 141 142 143 144 145 146 147 148 149 150 151 152 153 154 155 156 157 158 159 160 161 162 163 164 165 166 167 168 169 170 171 172 173 174 175 176 177 178 179 180 181 182 183 184 185 186 187 188 189 190 191 192 193 194 195 196 197 198 199 200 201 202 203 204 205 206 207 208 209 210 211 212 213 214 215 216 217 218 219 220 221 222 223 224 225 226 227 228 229 230 231 232 233 234 235 236 237 238 239 240 241 242 243 244 245 246 247 248 249 250 251 252 253 254 255 256 257 258 259 260 261 262 263 264 265 266 267 268 269 270 271 272 273 274 275 276 277 278 279 280 281 282 283 284 285 286 287 288 289 290 291 292 293 294 295 296 297 298 299 300 301 302 303 304 305 306 307 308 309 310 311 312 313 314 315 316 317 318 319 320 321 322 323 324 325 326 327 328 329 330 331 332 333 334 335 336 337 338 339 340 341 342 343 344 345 346 347 348 349 350 351 352 353 354 355 356 357 358 359 360 361 362 363 364 365 366 367 368 369 370 371 372 373 374 375 376 377 378 379 380 381 382 383 384 385 386 387 388 389 390 391 392 393 394 395 396 397 398 399 400 401 402 403 404 405 406 407 408 409 410 411 412 413 414 415 416 417 418 419 420 421 422 423 424 425 426 427 428 429 430 431 432 433 434 435 436 437 438 439 440 441 442 443 444 445 446 447 448 449 450 451 452 453 454 455 456 457 458 459 460 461 462 463 464 465 466 467 468 469 470 471 472 473 474 475 476 477 478 479 480 481 482 483 484 485 486 487 488 489 490 491 492 493 494 495 496 497 498 499 500 501 502 503 504 505 506 507 508 509 510 511 512 513 514 515 516 517 518 519 520 521 522 523 524 525 526 527 528 529 530 531 532 533 534 535 536 537 538 539 540 541 542 543 544 545 546 547 548 549 550 551 552 553 554 555 556 557 558 559 560 561 562 563 564 565 566 567 568 569 570 571 572 573 574 575 576 577 578 579 580 581 582 583 584 585 586 587 588 589 590 591 592 593 594 595 596 597 598 599 600 601 602 603 604 605 606 607 608 609 610 611 612 613 614 615 616 617 618 619 620 621 622 623 624 625 626 627 628 629 630 631 632 633 634 635 636 637 638 639 640 641 642 643 644 645 646 647 648 649 650 651 652 653 654 655 656 657 658 659 660 661 662 663 664 665 666 667 668 669 670 671 672 673 674 675 676 677 678 679 680 681 682 683 684 685 686 687 688 689 690 691 692 693 694 695 696 697 698 699 700 701 702 703 704 705 706 707 708 709 710 711 712 713 714 715 716 717 718 719 720 721 722 723 724 725 726 727 728 729 730 731 732 733 734 735 736 737 738 739 740 741 742 743 744 745 746 747 748 749 750 751 752 753 754 755 756 757 758 759 760 761 762 763 764 765 766 767 768 769 770 771 772 773 774 775 776 777 778 779 780 781 782 783 784 785 786 787 788 789 790 791 792 793 794 795 796 797 798 799 800 801 802 803 804 805 806 807 808 809 810 811 812 813 814 815 816 817 818 819 820 821 822 823 824 825 826 827 828 829 830 831 832 833 834 835 836 837 838 839 840 841 842 843 844 845 846 847 848 849 850 851 852 853 854 855 856 857 858 859 860 861 862 863 864 865 866 867 868 869 870 871 872 873 874 875 876 877 878 879 880 881 882 883 884 885 886 887 888 889 890 891 892 893 894 895 896 897 898 899 900 901 902 903 904 905 906 907 908 909 910 911 912 913 914 915 916 917 918 919 920 921 922 923 924 925 926 927 928 929 930 931 932 933 934 935 936 937 938 939 940 941 942 943 944 945 946 947 948 949 950 951 952 953 954 955 956 957 958 959 960 961 962 963 964 965 966 967 968 969 970 971 972 973 974 975 976 977 978 979 980 981 982 983 984 985 986 987 988 989 990 991 992 993 994 995 996 997 998 999 1000 1001 1002 1003 1004 1005 1006 1007 1008 1009 1010 1011 1012 1013 1014 1015 1016 1017 1018 1019 1020 1021 1022 1023 1024 1025 1026 1027 1028 1029 1030 1031 1032 1033 1034 1035 1036 1037 1038 1039 1040 1041 1042 1043 1044

— 17 —

शक्ति घन्य है ! यदि तुम जैसे बोर और तुम जैसे आत्मा-
भिमानि राजपूत न होते तो राजपूताने में आज इतनी
रियासतें देखने में न आतीं । खेल-तमाशे में भी जो
खरने देश, अपनी जाति, अपनी मातृ-भूमि का अपमान
और गौरव-क्षति नहीं सहन कर सकता, प्राण देकर भी
जो उसकी मर्यादा की रक्षा करना है वही उसका स्वामी
होने का अधिकारी भी हो सकता है ।

पाठ सहायक

१—विशेषण—राजपूताने में बहुत से समीप एक स्थान है ।

सम्बन्ध = सुनना नम = नमस्कार भाव = भावना = होमहार ।

आखेर = अन्त

२—मातृ-भूमि का अर्थ है वह देश जहाँ मातृ-भूमि की
रक्षा के लिये लोग अपने-अपने-अपने काम करते हैं । इस बात के
बिना ही हमें यह कहना होगा कि मातृ-भूमि का अर्थ है मातृ-
भूमि के अर्थ में वह देश जहाँ मातृ-भूमि का अर्थ है ।

अभ्यास

१. नीचे दी गई वाक्यों में से दो वाक्यों को चुनो ।

२. नीचे दी गई वाक्यों में से दो वाक्यों को चुनो ।

३. नीचे दी गई वाक्यों में से दो वाक्यों को चुनो ।

४. नीचे दी गई वाक्यों में से दो वाक्यों को चुनो ।

५. नीचे दी गई वाक्यों में से दो वाक्यों को चुनो ।

६. नीचे दी गई वाक्यों में से दो वाक्यों को चुनो ।

७. नीचे दी गई वाक्यों में से दो वाक्यों को चुनो ।

चढ़ बहाड़ पर यही पुकारो,
मैदानों में यही एचारो ।

“घृष्णा द्वेष सब दूर धरेंगे,
सब से हिल-मिल प्रेम करेंगे ॥”

प्रेम-फौज का साज सजाकर,
प्रेम-दुन्दुभी मधुर बजाकर ।

सहमत हो, सब काम करेंगे,
भारत में आनन्द भरेंगे ॥

दिन में, निशि में, सभी समय में,
मम्वक में श्री मृदुल हृदय में,

यह विचार मित्रों के भरना,
“पारस्परिक द्वेष परिहरना ॥”

द्वेष भाव में आग लगाकर,
हुठ और अन्याय भगाकर,

सब पर प्रेम-बारि दारेंगे,
भारत के सुधार्म्य मारेंगे ॥

जल में, पल में और खन में,
हिमालय में और खन में,

कैला दो बिचार हुन सेना,
“हम में हुन में अंतर कैसा ?”

“भारी है, पर एक हजारा,
भारी बन कर करो हजारों ॥”

अभ्यास

१. अर्थ लिखो और इनका तार्क्य भी समझाओ—प्रेम-दुन्दुभी, प्रेम-वारि, प्रेम-राज्य और प्रेम-मंत्र ।
२. शब्दार्थ लिखो—अन्यास । सारंगे । यवन । प्रेम-मिठाई ।
३. अर्थ लिखो और अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।
 “दुगा द्वेष सब दूर धरेंगे,
 सब से दिल-मिल प्रेम करेंगे ॥”
 “पारस्परिक द्वेष परिहरना” ।
 “प्रेम मंत्र जिसने मन धारा,
 उसने विजय किया जग धारा ॥”
४. एकता न होने से देश की क्या दशा होती है ?
५. ‘प्रेम के प्रभाव से संसार के प्रत्येक काम बढ़ी सरलता से हो जाते हैं ।’ इसका प्रमाण अपनी सरल भाषा में दो ।
६. हिन्दुओं और मुसलमानों के आपसी द्वेष का कारण लिखो ।

२८—ताता का छोहे का कारखाना

[इस पाठ की लेखिका हमारी उमा काटजू हैं । आग्रछ की लेखिकाओं में काप बहुत ही होनहार हैं । उन्होंने यह लेख प्रयाग से प्रकाशित ‘नरस्यही’ पत्रिका में प्रकाशित किया । वहीं से यहाँ प्रकृत किया गया है ।]

जमशेदजी नमरवानजी ताना बख्श से जियाजी पारसी थे । पहले वह मालूरी हैंसियत से थे; परन्तु अपनी जेहनत और बहुराई से उन्होंने रत्नगर में तानाजी नमरवाँ पैदा की । उन्होंने बहुत से ऐसी चीजें से बनाने के कारखाने भी गाँवों की परते इस देश में मशीनों से बड़ी लड़ाई में नहीं बनायी जाती थी । विश्व जंगल में ऐसे ही कारखानों में से एक छोहे का कारखाना है । वही का बरतन नीचे दिया जाता है ।]



कृषि में काम में का एक दृश्य — जमशेदपुर

बौध्दालय भी है। शहर की सफाई तथा स्वच्छता का भी अच्छा प्रबन्ध है।

कम्पनी ने अपने कर्मचारियों के बालकों तथा बालिकाओं की शिक्षा का भी बहुत ही अच्छा प्रबन्ध किया है। शहर के प्रत्येक भाग में एक-एक प्राथमिक पाठशाला हैं, जिनमें बिना किसी भेद-भाव के सुप्रति शिक्षा दी जाती है। बालकों के लिए एक हाईस्कूल तथा दो मिडिल स्कूल हैं, तथा बालिकाओं के लिए एक मिडिल, एक जूनियर प्राइमरी तथा कई प्राथमिक पाठशालाएँ हैं। जो कारखाने में काम करते हैं उनके लिए भी कई-एक स्कूल खुले हुए हैं। इनमें भी सुप्रति ही शिक्षा दी जाती है।

खेल-कूद तथा मन-बहलाव के लिए भी शहर के अनेक स्थानों में मैदान हैं। यहाँ भारत के प्रायः सभी प्रान्तों के निवासी हैं। इन लोगों ने अपनी-अपनी ममियाँ खोल रखी हैं, जिनमें एक-दूसरे से मिलने-जुलने का अवसर प्राप्त होता है। कम्पनी की तरफ से भी कुछ खुले हुए हैं। हुनन्तानों की मस्जिद तथा ईदगाह, क्रिस्तानों के गिर्रों तथा निक्खों के गुरुद्वारा हैं, पर खेद की बात है कि यहाँ हिन्दुओं की कल्पना अविद्य होने पर भी एक भी अच्छा मन्दिर नहीं है। हिन्दी-भाषियों की कोई ममा-मनिति भी नहीं है, यहाँ एक दूसरे से मिलने का अवसर प्राप्त हो।

भारणों तथा बाधाओं से इनके जीवन-काल में इनका यह विचार कार्य-रूप में परिणत न हो सका। पर इनके सुपुत्रों (सर दोराब ताता तथा रतन ताता) ने अपने देश-भक्त पूजनीय पिता के विचारों को कार्य-रूप में परिणत कर अपनी पितृभक्ति का उत्तम परिचय दिया है। सन् १९०७ ईसवी में बम्बई में 'ताता आयरन ऐण्ड स्टील कम्पनी लिमिटेड' के नाम से एक कम्पनी रजिस्टर्ड हुई और सन् १९०८ ई० से यहाँ जङ्गल काटना और कारखाना बनाना आरम्भ हो गया।

यह कारखाना कई विभागों में बँटा हुआ है। 'कोक' के भट्टों में कच्चे कोयले को जलाकर उसका 'कार्बन' निकाल देते हैं तथा धुएँ से अलकतरा तथा 'सल्फेट आफ एमोनिया' नामक एक प्रकार का नमक बनते हैं, जो खेतों की खाद के काम आता है। वात-भट्टे (Blast furnace) में लोहे के पत्थर को गैस तथा कोक की आँच से गलाकर कच्चा लोहा बनाते हैं। जब यह गला हुआ कच्चा लोहा भट्टे से निकलता है तब यहाँ का दृश्य देखने ही योग्य होता है। ऐसा मालूम होता है, मानों आग की नालियाँ बह रही हों।

इस कच्चे लोहे को बड़ी-बड़ी चाल्टियों में भरकर ईस्पात बनाने के भट्टों में इंजन-द्वारा ले जाते हैं और वहाँ हवा के द्वारा कार्बन कम कर भट्टे में ढालते हैं। जब ईस्पात

तनी छुट्टी चाह रहे हैं। तू आजमा तो कि हम अपने वचन का पालन करते हैं या नहीं ?”

व्याध के मन में श्रद्धा और कौतुक जाग उठा। ठीक सूर्योदय के पहले आ जाने की ताकीद करके उसने हरिणों को घर जाने दिया और खुद बिल्व के पत्तों को तोड़ता हुआ रात भर पेड़ पर जागता रहा।

ठीक सूरज उगने के समय पुनः लौट आने की प्रतिज्ञा उन्होंने की थी। अतः वे हरिण अपने घर गये, बाल बच्चों से मिले, अपने सींगों से एक दूसरे को खुजलाया, नन्हें बच्चों को प्रेम से चाटा, व्याध की कथा उन्हें कह सुनायी और बिदा मांगी; “शठं प्रति शायं कुर्यात्” (दुष्ट के साथ दुष्टता ही करनी चाहिये) अरे दुष्ट बहेलिये को दिये वचन को पालन करना चाहिये। अपने शरीर का ठमाम बल लगा कर यहाँ से चुपचाप भाग चले—ऐसी सलाह देनेवाला उनमें से कोई न निकला।

सगे-संबंधियों ने कहा, “चलिए, हम भी साथ चलते हैं। स्वेच्छा से मृत्यु स्वीकार करने पर मोक्ष मिलता है। आपके अवूर्ध्व ज्ञान-न्याय की देखकर हम पुनीत होंगे।”

बाल बच्चे माप हो लिये, नानों व्याध की हिमाशुति की परीक्षा करने निकले हों !

सूर्योदय के पहले छुट्ट आ पहुँचा। रातभर हरिण

अन्यास

- [illegible]

३०-४-१९५३

(三) 本會之宗旨，在於研究我國經濟，以謀國家之富強，及社會之進步，凡我會員，應各盡其力，以副宗旨。

[illegible]

कप्तान पहले से ही कुछ रोगी था। इस कारण वह जो चार ही पाँच दिन में इस लोक से चल बसा। उसकी मृत्यु से बड़ी हलचल मची। प्रत्येक व्यक्ति मुखिया बनकर दूसरों पर शासन करने की चेष्टा करने लगा। परन्तु दूसरे के आदेशानुसार चलना किसी को भला न लगता था। अन्त में सब लोगों ने सहमत होकर एक वृद्ध को अपना कप्तान नियत किया और उसकी आज्ञा में चलना स्वीकार किया।

कुछ दिन व्यतीत होने पर कप्तान ने देखा कि अब खाद्य-द्रव्य केवल तीन ही दिन के लिए बचा है, और इतनी अल्प सामग्री से हम सब का अधिक दिनों तक निर्वाह नहीं हो सकता। तब उसने सम्मति दी कि सबके नाम की चिट्ठियां डाली जाएँ और प्रत्येक चौथी चिट्ठी में जिसका नाम निकले, वह नहर में फेंक दिया जाए। ऐसा करने से सम्भव है कि कुछ दिन तक और निर्वाह हो सके। यह बात सब ने स्वीकार की। दौंगी पर, जैसा कि हम ऊपर लिख जाये हैं, कुछ १९ मनुष्य थे। उनमें एक बफान, एक पादरी और एक बर्द को, उनके

॥ १० ॥ हम ने यह लिखा है कि माते हमने अपने जीवन को के लिये जो-जो के लिए ईश्वर से माँगे वह सब प्राप्त होना होता है। वह माते के लिये ही सब-सब-सबों ने अपना प्रार्थना है। यदि माते हमने अपने जीवन को ही ईश्वर से माँगे है कि हमें बहुत न होना। हमने ही सब-सबों को ऐसा किया गया है।

हो गया, उसकी आँखों से अधुधारा बह चली और उसकी ह्रिचकी रँध गयी। वह अपने हृदय को कड़ा करके बोला, “प्यारे भैया; तुम कुछ भी करो, मैं तुम्हारा कখন नहीं मान सकता। देव की इच्छा से मरने की विष्टी मेरे नाम निकली है। अपने प्राण बचाने के लिए दूसरे के प्राण लेने में परा भारी पाठक होता है। और फिर, तुम हो मेरे सगे भाई हो और मेरी प्राण-रक्षा के लिए इतने उठावले होकर भाव-स्नेह प्रकट कर रहे हो। यदि मैं अपने प्राणों की रक्षा के लिए तुमको छोट के छाल में डाल दूँ तो तुम से बढ़कर पाठकी इस संसार में और कौन होगी? ऐसा करने पर मेरा हृदय रोक और मोह से दुःखित होना होगा। अन्त में किसी दिन तुम भी लाशरी हो आत्मघात करना रहेगा। इसलिए मैं ब्रह्मा हूँ कि तुम कुछ विन्ता न करो, इसे प्राण त्याग करने दो।”

लेखक भाग्य की बात सुनकर क्षणिक क्षण ने कहा, “यह जगत् विविध ज्ञान सन्निधे कि मैं अपने अन्तर्गत ज्ञानों की न समझे दूँगा।” इसका उत्तर लेखक ब्रह्मा के साथ सबसब से दूर-दूर कर गये गला। वह ऐसा लेखक को ने कहा, “भैया, जब तुम इसे सोच दो। तुम का जगत् को लाशरी, सन्निधे की न के लाशरी होने। मेरा हाथ पर हो, मैं पर दूँ। तुम इसे प्राण त्याग करने दो।”

जान होते ही मुजंबीकर के पहाड़ की तराई की भूमि
 हिलायी दी । उसे देखते ही नय की जान में जान आ गयी ।
 वहाँ के नमीप पर्वतालवालों की नयी बस्ती थी । वहाँ ये
 रंग ही पहुँच गये । उन दोनों आताओं का वृत्तान्त सुन-
 का वहाँ के निवासीगण बहुत प्रसन्न हुए और छोटे भाई
 एवं उसके प्राण बचानेवालों की बड़ी प्रशंसा करने लगे ।

पाठ-सहायक

मेडा = यह शहर ऐसे में एक शहरगाह है । वहाँ पर आलबल
 की पुर्णाल देवताओं का अधिवास है । पुर्णाल यूरोप में एक देश का
 नाम है । अमीबा = यह एक शहराईय है । हमारे देश के पश्चिम में है ।
 बगाने—यह जगह के प्रमुख बगानेवालों में सब से बड़ा अफसर होता
 है । तिरिहा = हिन्दु देश में । बगाने = एक शहर है, जिसकी सहायता
 के जगहों को सहायता के समर्थ दिशाओं का जगह कर सकते हैं ।

कथन

१. सहायता के शक्ति सब की बड़ी सहायता दायी है ।
२. तिरिहा अधिवास कर है । अमीबा यह शहराईय है । अमीबा बगाने
 के अधिवास के जगहों में तिरिहा तिरिहा शक्ति ।
३. इस बगाने के शक्ति शक्ति के इस बगाने अधिवास अधिवास
 अधिवास अधिवास है । अधिवास
४. अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास
५. अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास
६. अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास
७. अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास

• यह अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास
 अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास अधिवास

३. मनुष्य-जन्म बिना प्रहार कार्यक हो सकता है ।
४. प्रहार को इन्धन के विषय में पुनः कहा जाना ही है ।
५. भुव बौन था । और उन्होंने बिना प्रहार पद प्राप्त किया ।
६. देश के दुष्ट होने की भाँसा बाणको पर बिना प्रहार निर्भर है ।
७. यह कहना को याद करके मुनाशी ।

३२—महर्षि दधीचि

[इस पाठ के लेखक साहित्याचार्य परितोष बनारसेकर लखी हैं । ये लखी जिला (बिहार) के निवासी थे । उन्होंने संस्कृत के 'शारदा' और 'रत्नकर' तथा हिन्दी के 'गङ्गा' नामक पुस्तिका का सम्पादन किया था । हिन्दी में उन्होंने बहुत ही पुस्तकें लिखी थी, जन्मे जाह्नवीश्रीय रामायण और महाभारत के अनुवाद मुख्य हैं । 'हीरोराष्ट्रपति' नाम की पुस्तक में उन्होंने भारतीय राज्य के भारतीय हीरो के हीरोराष्ट्रपति बहुत अच्छे ढंग से लिखे हैं । सभी पुस्तक से अच्छे हिन्दी पुस्तकें लिखी गयी हैं ।]

महर्षि दधीचि हिन्दी राज में गा जाने हैं । यहाँ उनका पुत्रा जायम कहा था । जायम के आचरण की भूमि दुष्टों और लुटारों से लगी गयी थी । राज ही यह नहीं थी । राज जायम के और भी विपत्तियों से लगे हुए हैं । इन महर्षि राज का सम्पादन-विधान, यहाँ के राज में राज राज राज में राज के राज-राज के सम्पादन यहाँ में राज । महर्षि राज के राज-राज हैं । राज राज राज राज राज । हिन्दी राज राज राज राज राज राज राज राज राज राज राज । महर्षि राज राज राज राज राज राज राज राज राज राज राज

कि वह कुछ सोच रहे हैं। वहाँ उस समय जो बैठे थे उनका उस स्थान न था, वे तर्क-वितर्क में ही लीन थे। उसी समय अन्ना लोगो के सामने एक बृद्ध ब्राह्मण उपस्थित हुआ। लोगों ने उसका स्वागत किया। महर्षि को प्रणाम कर वह बैठ गया। महर्षि ने सीखी नगर से उसकी ओर देखा। वह पड़वा गया और खड़ा होकर हाथ जोड़कर बोला, “महाराज, मैं शूद्र हूँ। मैं ब्राह्मण-देश में आपकी सेवा में इसलिए उपस्थित हुआ हूँ कि हमें आपसे कुछ सीखना है। अठ्ठाईस मीनने के उपरान्त यह रूप धारण किया है।”

महर्षि ने कहा, “शूद्र, हम सब के लिए प्रसिद्ध हो। हम अपनी इस शून्य-स्थान नीति के कारण इस समय दुःख उठा रहे हो और हमारी इस अपेक्षा का वह समय देखो जो भोगना पड़ रहा है। यह हमसे निन्द्य रूप में ध्यान लेना चाहिये कि हम में रिज्जी होने की शक्ति नहीं है। हम अपने दिनों से देवराज्य का राज्य कर रहे हो। हमें इस तरह मान्यता अमुक हो जाना चाहिये था। यह हुआ है कि यह अभी तक नहीं हुआ।”

शूद्र ने कहा, “महाराज, यह नीति मेरी नहीं है, यह तो ब्राह्मणों की है। मैं ब्राह्मणों की नीति की कार्यवाही में बलिष्ठ करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। ऐसा करना मेरी नीति से बिल्कुल ही भिन्न है। मैंने ऐसा करने का प्रयत्न नहीं किया।”

कब ऐसे जानते हैं सदा भारतीय हम हैं अगम ।

कि एक बार है विश्व, तुम गाओ भारत की विजय ॥

साक्षी हैं इतिहास हमीं पढ़ते आगे हैं ।

जागृत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं ॥

शत्रु हमारे पार्श्व नहीं भय से भागे हैं ?

कायरता से कहीं प्राण हमने त्यागे हैं ?

हैं हमीं प्रकाशित कर चुके हम्यपि तब का भी हृदय ।

कि एक बार है विश्व तुम गाओ भारत की विजय ॥

कहीं प्रकाशित नहीं रहा है नरक हमारा ?

हीनता का चुके मग्न शत्रु हम ऐसे छात्र ?

हमारा क्या वीरता नहीं है हमने हमारा ?

हमारा क्या है वह कहीं वह हमने हमारा ?

कब पुनः भारत का नाम है वही नहीं है हमारा ?

कि एक बार है विश्व तुम गाओ भारत की विजय ॥

हमारा क्या है वह कहीं वह हमने हमारा ?

हीनता का चुके मग्न शत्रु हम ऐसे छात्र ?

हमारा क्या वीरता नहीं है हमने हमारा ?

हमारा क्या है वह कहीं वह हमने हमारा ?

कब पुनः भारत का नाम है वही नहीं है हमारा ?

कि एक बार है विश्व तुम गाओ भारत की विजय ॥

पाठ- सहायक

शीर्ष = शूरता, वीरता । साधी = गवाही, सबूत देनेवाला । मुरपति = रन्द्र । अवनि = पृथ्वी । यूनानी तो हारे—यह गीत चन्द्रगुप्त मौर्य के सैनिकों ने उस समय गाया था जिस समय उन्होंने यूनानी राजा सिल्यूकस को हरा दिया था ।

अभ्यास

१. शब्दार्थ बताओ—अमय, जायति, कायरता, दलित, शरणागत, प्रकम्पित ।
२. अर्थ लिखो और अपने वाक्यों में प्रयोग करो—जग में नृप हैं । भारत की विजय । कायरता से प्राण त्यागना । दलित करना । शीर्ष । सकुचाता । मग्गोर ।
३. भारतवाकियों के विशेष गुणों का वर्णन करो ।
४. शरणागत के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए ।
५. श्लोक के समय मनुष्य की क्या दशा हो जाती है ।
६. निम्नलिखित शब्दों को व्याकरण से बताओ—शीर्ष, शीर्ष, गुण, हम, भारत, मुरपति, वतकाओ और अवनि ।
७. इस कविता को बार-बार सुनाओ ।

